

# विस्तृत पाठ्यविवरण (Detailed Syllabus)



बी.एड.(दूर शिक्षा)  
B.Ed. (Distance Education)



शिक्षा विभाग (दूर शिक्षा निदेशालय)

**(Department of Education: Director of Distance Education)**

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

पोस्ट - हिंदी विश्वविद्यालय, गाँधी हिल्स, वर्धा, महाराष्ट्र - 442001

[www.hindivishwa.org](http://www.hindivishwa.org)

## प्रस्तावना

शिक्षा एवं साक्षरता निर्विवादित रूप से किसी भी समाज के विकास के मापदंड एवं मानदंड के तौर पर देखी जाती रही है। कहा जाता है कि देश के प्रारब्ध का निर्माण उसकी कक्षाओं में होता है। ऐसी स्थिति में देश के प्रारब्ध-निर्माण में शिक्षक की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसीलिए कहा गया है कि - किसी समाज की गुणवत्ता का स्तर उसके शिक्षकों के स्तर से प्रतिबिम्बित होता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की रूपरेखा के निर्धारण का सुदीर्घ इतिहास रहा है एवं विभिन्न कालखंडों में, विभिन्न विचारधाराओं के प्रादुर्भाव एवं प्रभाव के साथ साथ, शैक्षिक प्रक्रिया एवं पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में सम्पूर्ण शैक्षिक उपक्रम के साथ साथ अध्यापक-शिक्षा के साथ भी अनगिनत प्रयोग होते रहे हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान में शिक्षा को मूल अधिकार का दर्जा दिया गया है। इसके साथ-साथ नीतिगत दस्तावेजों में शिक्षा को बाल-केन्द्रित, अनुभव आधारित एवं स्वतंत्र चेतना के विकास में उत्प्रेरक के रूप में देखा गया है। समय-समय पर राष्ट्रीय स्तर पर एवं राज्यों में विद्यालयी पाठ्यचर्या के पुनरावलोकन और पुनरीक्षण के माध्यम से इन मूल्यों के पोषण का प्रयत्न भी किया जाता रहा है। अध्यापक शिक्षा की रूपरेखा पर भी समय-समय पर विद्यालयी शिक्षा के सन्दर्भ में किये गए प्रयोगों एवं पुनरीक्षणों का प्रभाव पड़ा है। यद्यपि यह प्रभाव अभी भी अधिकतर सैद्धांतिक रूप से नीतिगत दस्तावेजों तक ही सीमित रहा है। शिक्षक-प्रशिक्षण अथवा अध्यापक शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर बने पाठ्यक्रम एवं उनके व्यावहारिक क्रियान्वयन के माध्यम से अभी तक अध्येता पूर्व-स्थापित विद्यालयी व्यवस्था में समायोजित होने भर के लिए ही तैयार किये जाते हैं। वर्तमान विद्यालयी व्यवस्था में सकारात्मक रूप से परिवर्तन हेतु हस्तक्षेप के लिए शायद ही कोई शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम या अध्यापक शिक्षा की रूपरेखा प्रभावी भूमिका निभाती हो। अबतक के शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य शिक्षकों को मात्र कुछ सूचनाओं एवं शिक्षण के यांत्रिक प्रकृति के कौशलों से युक्त कर देना भर होता रहा है। इन कार्यक्रमों में न तो विद्यालय एवं समाज से जुड़े व्यापक और समसामयिक मुद्दों पर चर्चा करने का पर्याप्त अवसर होता था, न ही नए प्रकार के शैक्षणिक अनुभवों एवं विमर्श के लिए समुचित संभावना। विगत कुछ वर्षों में सैद्धांतिक रूप से भले ही छात्र-केन्द्रित शिक्षा प्रक्रिया की चर्चा होने लगी है, तथापि अध्येता अंततः उसी पुरानी विद्यालयी व्यवस्था के यंत्रवत अंग हो जाते रहे हैं जहां पर येन-केन-प्रकारेण परीक्षा के पूर्व तक किसी प्रकार पाठ्यक्रम के समापन की संस्कृति विद्यमान है। जहाँ शिक्षक द्वारा हस्तांतरित ज्ञान को बिना प्रश्न किये स्वीकार कर लेने की परंपरा अन्तर्निहित है। अध्यापक-शिक्षा के अब तक प्रचलित कार्यक्रमों में पाठ्यचर्या, विषयवस्तु, विषयानुशासन की प्रकृति एवं पाठ्यक्रम में भाषा की केन्द्रीयता पर विमर्श की पर्याप्त संभावना नहीं रही है, न ही ज्ञान के निर्माण की दिशा में किये जाने योग्य प्रयत्न के लिए समुचित अवसर प्रतीत होते हैं। अधिकतर शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षु शिक्षकों के मौलिक चिंतन एवं अनुभवों की अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर की कमी रही है। इन सब का परिणाम विद्यालयों के वर्तमान शैक्षिक स्वरूप पर दिखाई देता है।

वर्तमान शैक्षिक विमर्शों में शिक्षकों की भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। पहले की शिक्षक-केन्द्रित कक्षा की केन्द्रीय सत्ता से हटकर शिक्षक की भूमिका उस मार्गदर्शक के रूप में देखी जाने लगी है जो ज्ञान का हस्तांतरण करने की जगह छात्रों के ज्ञान निर्माण करने के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करता है एवं उनके सीखने की प्रक्रिया में सहायक की भूमिका निभाता है। शिक्षक की भूमिका का यह स्वरूप वर्तमान शिक्षक पर और अधिक उत्तरदायित्व डालता है। ज्ञान की निर्माणवादी विचारधारा शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में छात्रों की अधिक सक्रिय भूमिका को इंगित करती है जिसमें समुचित प्रेरणा प्रदान करने के उद्देश्य से शिक्षक की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। वर्तमान विमर्श में शिक्षक की भूमिका स्वयं सतत ज्ञान की खोज करने वाले जिज्ञासु के रूप में, अनुसंधानकर्ता के रूप में, छात्रों की जिज्ञासा के उत्प्रेरक के रूप में देखी जाती है। यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय एवं शिक्षाशास्त्रीय अवधारणाओं के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझे एवं तदनुसार सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया में स्वयं की भूमिका को

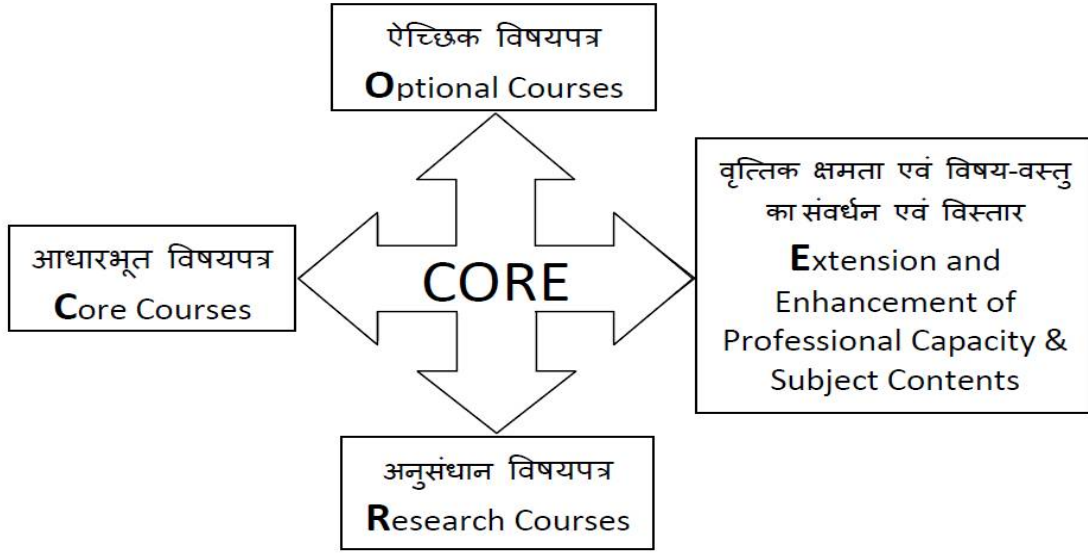
आत्मसात करे। इसके साथ ही शैक्षिक प्रक्रियाओं पर छात्र एवं शिक्षक के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सन्दर्भों के प्रभाव की समझ एवं संवेदनशीलता भी वर्तमान शैक्षिक सरोकार के अपरिहार्य तत्व हैं, जिसपर अध्यापक-शिक्षा की पाठ्यचर्या में एवं शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न स्तरों पर समुचित विमर्श की संभावना होनी चाहिए।

यह समस्त मीमांसा, अध्यापक-शिक्षा की पाठ्यचर्या में आमूल-चूल परिवर्तन की अपेक्षा करती है, जिसे ध्यान में रखते हुए बी.एड. की इस नयी पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम का निर्माण हुआ है। इस पाठ्यचर्या के निर्माण में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) द्वारा सुझाए गए बी.एड. पाठ्यचर्या की रूपरेखा के साथ-साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के 'च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम(CBSE)' संबंधी दिशानिर्देशों को भी ध्यान में रखा गया है। यह प्रयास किया गया है कि छात्र अध्यापक शिक्षा के आधारभूत अवयवों के साथ-साथ अन्य अनुशासनों से भी अपनी रूचि के अनुसार विषयों का चयन कर सकें एवं इस प्रकार अपने ज्ञान एवं शैक्षिक अनुभव का समुचित संवर्धन एवं विस्तार कर सकें। यह अपेक्षित है कि यह पाठ्यक्रम निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति में सक्षम हो:

- अध्येता शिक्षा एवं शैक्षिक प्रक्रिया के विभिन्न अवयवों के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, एवं शिक्षाशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को समझ सकें एवं तदनुसार अपने अनुभवों एवं अंतर्दृष्टि का समुचित संवर्धन एवं विस्तार कर सकें।
- प्रशिक्षु साझे अनुभव से होने वाले ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया की विशिष्टता को व्यक्तिगत अनुभव से समझें एवं छात्रों के सीखने की प्रक्रिया के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण कर सकात्मक रूप से उत्प्रेरक की भूमिका निभा सकें।
- शिक्षकों की सृजनात्मक क्षमता का समुचित विकास हो एवं उनमें नवाचार की प्रवृत्ति विकसित हो। साथ ही क्रियात्मक अनुसंधान के लिए उनमें आवश्यक तत्परता आए।
- शैक्षिक आकलन एवं मूल्यांकन का सीखने की प्रक्रिया के साथ सार्थक संबंध हो।
- ज्ञान को पृथक्ता में न समझा जाए बल्कि उसे शिक्षार्थियों के समग्र परिवेश से जोड़कर एवं विभिन्न विषयानुशासनों के साथ के अंतर्संबंध के परिप्रेक्ष्य में समझने की प्रवृत्ति विकसित हो सके।
- अध्येता अपने शिक्षण-विषयों के साथ-साथ अन्य विषयों की प्रकृति को भी व्यापक अर्थ में समझ सकें एवं उनकी वृत्तिक क्षमता का समुचित संवर्धन एवं विकास हो सके।
- सूचना तकनीकी के साथ-साथ अन्य नयी तकनीकों की जानकारी लेकर उन्हें अपने कार्य का माध्यम बना सकें एवं समय-समय पर उसे अद्यतन भी करते रहें।
- प्रभावी शिक्षण के लिए कला की विभिन्न विधाओं के महत्त्व की समझ विकसित हो सके एवं शिक्षक उन विधाओं का व्यावहारिक प्रयोग अपने शिक्षण में कर सकें।
- समाज के विभिन्न वर्गों से आने वाले छात्रों के सामाजिक-सांस्कृतिक-शैक्षिक-आर्थिक परिवेश के प्रति संवेदनशीलता विकसित हो एवं शिक्षक समावेशी शैक्षिक वातावरण का निर्माण कर सकें।
- अध्येता अपने परिवेश एवं समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझ सकें एवं उसी भावना का विकास अपने छात्रों में भी करने योग्य बन सकें।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के दूर शिक्षा निदेशालय द्वारा संचालित बी.एड.पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या "कोर" मॉडल ('Core' Model) पर आधारित हैं। इस "कोर" मॉडल ('Core' Model) के निम्नलिखित घटक हैं:

## CORE MODEL (कोर मॉडल)



### CORE MODEL (कोर मॉडल) आधारित विषयवार विवरण

C	O		R	E
<b>Core Courses</b> आधारभूत विषयपत्र	<b>Optional Courses</b> ऐच्छिक विषय पत्र		<b>Research courses</b> अनुसंधान विषयपत्र	<b>Extension and Enhancement of Professional Capacity &amp; Subject Contents</b> वृत्तिक क्षमता एवं विषय-वस्तु का संवर्धन एवं विस्तार
	Pedagogy of School Subject विद्यालय विषय शिक्षण (एक)	Other Optional Courses अन्य वैकल्पिक विषय पत्र (एक)		
<ul style="list-style-type: none"> <li>● शिक्षा एवं शिक्षा के प्रयोजन</li> <li>● शिक्षार्थी एवं उसका सन्दर्भ</li> <li>● समकालीन भारत एवं शिक्षा</li> <li>● संज्ञान, अधिगम एवं शिक्षण</li> <li>● शैक्षिक आकलन</li> <li>● ज्ञान और पाठ्यचर्या</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● हिन्दी शिक्षण</li> <li>● अंग्रेजी शिक्षण</li> <li>● संस्कृत शिक्षण</li> <li>● मराठी शिक्षण</li> <li>● सामाजिक विज्ञान शिक्षण</li> <li>● भौतिकीय विज्ञान शिक्षण</li> <li>● जीव विज्ञान शिक्षण</li> <li>● गणित शिक्षण</li> <li>● प्रदर्शनकारी कला एवं शिक्षा</li> <li>● स्वास्थ्य एवं योग शिक्षा</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● हिन्दी शिक्षण</li> <li>● अंग्रेजी शिक्षण</li> <li>● संस्कृत शिक्षण</li> <li>● मराठी शिक्षण</li> <li>● सामाजिक विज्ञान शिक्षण</li> <li>● भौतिकीय विज्ञान शिक्षण</li> <li>● जीव विज्ञान शिक्षण</li> <li>● गणित शिक्षण</li> <li>● प्रदर्शनकारी कला एवं शिक्षा</li> <li>● स्वास्थ्य एवं योग शिक्षा</li> <li>● जेण्डर, विद्यालय और समाज</li> <li>● मानवाधिकार एवं शांति शिक्षा</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● क्रियात्मक अनुसंधान</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● विद्यालय संपर्क कार्यक्रम</li> <li>● विद्यालय अनुभव (इंटर्नशिप) कार्यक्रम</li> <li>● शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी</li> <li>● विद्यालय प्रशासन एवं संगठन</li> <li>● विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व</li> <li>● प्रदर्शनकारी कला एवं शिक्षा</li> <li>● स्वास्थ्य एवं योग शिक्षा</li> <li>● शिक्षा तकनीकी</li> <li>● शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श</li> <li>● पर्यावरण शिक्षा</li> <li>● जेण्डर, विद्यालय और समाज</li> <li>● मानवाधिकार एवं शांति शिक्षा</li> </ul>

## दो वर्षीय बी.एड.पाठ्यक्रम की संरचना

प्रथम सेमेस्टर			द्वितीय सेमेस्टर		
कोर्सकोड	विषय	पूर्णांक / क्रेडिट	कोर्स कोड	विषय	पूर्णांक / क्रेडिट
सैद्धांतिक शिक्षा 011	शिक्षा एवं शिक्षा के प्रयोजन	100 / 4	सैद्धांतिक शिक्षा 021	संज्ञान, अधिगम एवं शिक्षण	100 / 4
शिक्षा 012	शिक्षार्थी एवं उसका सन्दर्भ	100 / 4	शिक्षा 022	शैक्षिक आकलन	100 / 4
शिक्षा 013	समकालीन भारत एवं शिक्षा	100 / 4	शिक्षा 023	विद्यालय विषय शिक्षण	100 / 4
शिक्षा 014	शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी	100 / 4	शिक्षा 024	विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व	100 / 4
शिक्षा 015	विद्यालय प्रशासन एवं संगठन	100 / 4	शिक्षा 025	व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम (एक सप्ताह)	100 / 4
<b>सत्रीय कार्य</b>	शिक्षा एवं शिक्षा के प्रयोजन शिक्षार्थी एवं उसका सन्दर्भ समकालीन भारत एवं शिक्षा शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी विद्यालय प्रशासन एवं संगठन		<b>सत्रीय कार्य</b>	संज्ञान, अधिगम एवं शिक्षण शैक्षिक आकलन विद्यालय विषय शिक्षण विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम (एक सप्ताह)	
	<b>कुल अंक/ क्रेडिट</b>	<b>500/ 20</b>		<b>कुल अंक/ क्रेडिट</b>	<b>500/ 20</b>
तृतीय सेमेस्टर			चतुर्थ सेमेस्टर		
कोर्स कोड	विषय	पूर्णांक/क्रेडिट	कोर्स कोड	विषय	पूर्णांक/क्रेडिट
प्रायोगिक शिक्षा 031	विद्यालय शिक्षण अनुभव कार्यक्रम (18 सप्ताह)	400 /16	सैद्धांतिक शिक्षा 041	● शिक्षा तकनीकी	100 / 4
प्रायोगिक शिक्षा 032	विषय शिक्षा (प्रायोगिक)	100 /04	शिक्षा 042	● शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श	100 / 4
			शिक्षा 043	● ज्ञान और पाठ्यचर्या	100 / 4
			शिक्षा 044	● पर्यावरण शिक्षा	100 / 4
			शिक्षा 045	● जेण्डर, विद्यालय और समाज (ऐच्छिक विषय)	100 / 4
			शिक्षा 046	● मानवाधिकार एवं शांति शिक्षा (ऐच्छिक विषय)	100 / 4
			<b>सत्रीय कार्य</b>	● शिक्षा तकनीकी	
				● शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श	
				● ज्ञान और पाठ्यचर्या	
				● पर्यावरण शिक्षा	
				● जेण्डर, विद्यालय और समाज (ऐच्छिक विषय)	
				● मानवाधिकार एवं शांति शिक्षा (ऐच्छिक विषय)	
	<b>कुल अंक/ क्रेडिट</b>	<b>500/ 20</b>		<b>कुल अंक/ क्रेडिट</b>	<b>500 / 20</b>

### विद्यालय संपर्क कार्यक्रम (एक सप्ताह) - 4 क्रेडिट

1	कक्षा शिक्षण अवलोकन एवं रिपोर्ट लेखन : चयनित विषयों के (05) एवं अन्य विषयों के (10) कक्षा अवलोकन एवं सारांश (प्रत्येक कक्षा अवलोकन के लिए अधिकतम 03 अंक और सारांश लेखन के लिए अधिकतम 05 अंक)	2 क्रेडिट
2	<ul style="list-style-type: none"> <li>विद्यालय परिवेश व अन्य गतिविधियों का अवलोकन, रिपोर्ट लेखन एवं परियोजना तैयार करना (अधिकतम 15 अंक)</li> <li>पाठ-सहगामी क्रिया का आयोजन तथा प्रबंधन (05 पाठ-सहगामी क्रिया) (प्रत्येक पाठ-सहगामी क्रिया का आयोजन, प्रबंधन एवं रिपोर्ट लेखन के लिए अधिकतम 04 अंक)</li> <li>विद्यालयी दैनिकी (एक सप्ताह) (प्रत्येक दिन की दैनिकी के लिए अधिकतम 02 अंक और रिपोर्ट लेखन के लिए अधिकतम 03 अंक)</li> </ul>	2 क्रेडिट
	कुल	4 क्रेडिट

### विद्यालय अनुभव कार्यक्रम (18 सप्ताह) - 16 क्रेडिट

1	<ul style="list-style-type: none"> <li>सूक्ष्म शिक्षण (05 कौशल) व्याख्या कौशल, दृष्टांत देना, उद्दीपन परिवर्तन, श्यामपट का प्रयोग, पुनर्बलन पर सूक्ष्म पाठ योजना निर्माण एवं क्रियान्वयन</li> <li>चयनित विषयों की पाठ योजना का निर्माण (20)</li> <li>पाठ योजना का क्रियान्वयन (20)</li> <li>उपलब्धि परिक्षण रिपोर्ट</li> <li>प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)</li> <li>क्रियात्मक अनुसंधान</li> <li>विद्यालय अभिलेखोंका विवरण एवं प्रस्तुति</li> <li>मनोविज्ञान प्रयोगात्मक</li> <li>सामुदायिक कार्य एवं रिपोर्ट</li> </ul>	02 02 02 01 02 02 02 02 01
2	सत्रांत शिक्षण (Final Teaching)	04 क्रेडिट
	कुल	16 क्रेडिट

### मूल्यांकन विधि

बी.एड. पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों के लिए मूल्यांकन विधि निम्नलिखित रूप से होगी

### सेमेस्टर - 1

क्र.सं	कोर्स कोड	कोर्स / विषय का नाम	पूर्णांक / क्रेडिट	मूल्यांकन विधि
1	शिक्षा 011	शिक्षा एवं शिक्षा के प्रयोजन	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
2	शिक्षा 012	शिक्षार्थी एवं उसका सन्दर्भ	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
3	शिक्षा 013	समकालीन भारत एवं शिक्षा	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
4	शिक्षा 014	शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
5	शिक्षा 015	विद्यालय प्रशासन एवं संगठन	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन

## सेमेस्टर - 2

क्र.सं.	कोर्स कोड	कोर्स / विषय का नाम	पूर्णांक / क्रेडिट	मूल्यांकन विधि
1	शिक्षा 021	संज्ञान, अधिगम एवं शिक्षण	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
2	शिक्षा 022	शैक्षिक आकलन	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
3	शिक्षा 023	विद्यालय विषय शिक्षण	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
4	शिक्षा 024	विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
5	शिक्षा 025 (प्रायोगिक)	व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम (एक सप्ताह)	100 / 4	आन्तरिक मूल्यांकन

## सेमेस्टर -3

क्र.सं.	कोर्स कोड	कोर्स / विषय का नाम	पूर्णांक / क्रेडिट	मूल्यांकन विधि
1	शिक्षा 031 (प्रायोगिक)	विद्यालय शिक्षण अनुभव कार्यक्रम (18 सप्ताह)	400 /16	आन्तरिक मूल्यांकन
2	शिक्षा 032 (प्रायोगिक)	विषय शिक्षण (प्रायोगिक)	100 /04	आन्तरिक मूल्यांकन

## सेमेस्टर - 4

क्र.सं.	कोर्स कोड	कोर्स / विषय का नाम	पूर्णांक / क्रेडिट	मूल्यांकन विधि
1	शिक्षा 041	● शिक्षा तकनीकी	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
2	शिक्षा 042	● शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
3	शिक्षा 043	● ज्ञान और पाठ्यचर्या	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
4	शिक्षा 044	● पर्यावरण शिक्षा	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
5	शिक्षा 045	● जेण्डर, विद्यालय और समाज (ऐच्छिक विषय)	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन
6	शिक्षा 046	● मानवाधिकार एवं शांति शिक्षा (ऐच्छिक विषय)	100 / 4	सत्रांत मूल्यांकन+ आन्तरिक मूल्यांकन

### टिप्पणी

- बी.एड. पाठ्यक्रम कुल 80 क्रेडिट का होगा एवं इसकी अवधि चार सेमेस्टर (दो वर्ष) की होगी।
- प्रत्येक सेमेस्टर 20 क्रेडिट का होगा।
- कुल 80 क्रेडिट के विषयपत्रों में से 64 क्रेडिट के विषयपत्र दू शिक्षा निदेशालय द्वारा पढाए जायेंगे।
- प्रत्येक सेमेस्टर में सैद्धांतिक विषयों के शिक्षण के अलावा सत्रीय एवं प्रायोगिक कार्य भी आयोजित किये जायेंगे। इसके लिए विभिन्न सैद्धांतिक विषयों तथा अकादमिक संवर्धन हेतु सत्रीय एवं प्रायोगिक कार्य निर्धारित किये गए हैं।
- विभिन्न विषयों की मूल्यांकन विधि आतंरिक एवं सत्रांत मूल्यांकन का योग होगी। सत्रांत मूल्यांकन लिखित परीक्षा के रूप में विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जायेगी वहीं आतंरिक मूल्यांकन दू शिक्षा निदेशालय के

संबंधीत शिक्षक एवं अध्ययन केंद्र के शिक्षकों द्वारा सत्रीय एवं प्रायोगिक कार्य आदि के माध्यम से सतत एवं व्यापक रूप से आयोजित की जायेगी। सैद्धांतिक विषयों के आंतरिक मूल्यांकन का आधार उनसे संबंधी सत्रीय एवं प्रायोगिक कार्य हो सकते हैं। प्रायोगिक विषय जैसे विद्यालय संपर्क कार्यक्रम तथा विद्यालय अनुभव (इंटरशिप) कार्यक्रम का मूल्यांकन केवल आंतरिक रूप से किया जायेगा।

- प्रत्येक विषय में कुल 100 अंकों में से सत्रांत मूल्यांकन 70 अंकों का तथा आंतरिक मूल्यांकन 30 अंकों का होगा।
- प्रत्येक विषय के लिए निर्धारित पाठ्य-वस्तु में संबंधी शिक्षक द्वारा इसके शिक्षण के दौरान उत्पन्न कठिनाइयों तथा आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया जा सकता है।
- अध्येता स्नातक स्तर पर पढ़े गए विषयों में से किसी एक विषय को विद्यालय विषय शिक्षण के रूप में चुनेंगे तथा विद्यालय संपर्क कार्यक्रम एवं विद्यालय अनुभव (इंटरशिप) कार्यक्रम के दौरान अनिवार्य रूप से उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक स्तर पर इससे जुड़ी गतिविधियों का क्रमशः अवलोकन तथा क्रियान्वयन करेंगे।
- विषय शिक्षा (प्रायोगिक) के क्रियान्वयन हेतु विभिन्न अध्ययन केंद्रों पर सत्रांत शिक्षण परीक्षा का आयोजन किया जायेगा। जिसमें अध्येता को विद्यालय विषय शिक्षण के रूप में चयनित विषय पाठयोजना का निर्माण एवं क्रियान्वयन किया जायेगा। तृतीय सेमेस्टर में निर्धारित प्रायोगिक कार्य पर आधारित मौखिक परीक्षा होगी, जिसका मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा नामित आंतरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा किया जायेगा।

## पाठ्यक्रम की सेमेस्टरवार विवेचना

### प्रथम सेमेस्टर

## शिक्षा 011: शिक्षा एवं शिक्षा के प्रयोजन (Education and Its Purpose) - 4 क्रेडिट

### शिक्षण उद्देश्य:

- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य अध्येताओं को शिक्षा के बुनियादी विचारों और अवधारणाओं से परिचित कराना है।
- इसके द्वारा वे विभिन्न सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक परम्पराओं में व्यक्त शिक्षा, ज्ञान और सीखने की मान्यताओं का परीक्षण कर सकेंगे।
- इसके अतिरिक्त वे शिक्षा की प्रक्रिया में मूल्यों की भूमिका का भी आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।

### इकाई 1: शिक्षा की अवधारणा

शिक्षा की अवधारणा: अर्थ, प्रक्रिया, स्वरूप, उद्देश्य और आधारभूत अवधारणाएँ: सीखना, शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुदेशन, खोज, सूचना, आगमन व निगमन, अनुभव, अन्वेषण और संवाद।



### इकाई 2: शिक्षा में पाश्चात्य विचारकों का योगदान

पाश्चात्य विचारकों का योगदान: प्लेटो, अरस्तू, फ्रोबेल, मारिया माण्टेसरी, रूसो, ड्यूई, पाउलो फ्रेरे, देकार्त, स्पिनोजा, इमेनुएल कांट।

### इकाई 3: शिक्षा सम्बन्धी भारतीय विचारक और भारतीय शिक्षा दर्शन

शिक्षा विषयक भारतीय विचारक: कुछ प्रमुख भारतीय शिक्षा विचारकों का योगदान: महात्मा गांधी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद, जिदू कृष्णमूर्ति, श्री अरविन्द, गिजु भाई। न्याय, सांख्य, योग, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदांत दर्शन के अनुसार शिक्षा, बौद्ध एवं जैन धर्म के अनुसार शिक्षा।

### इकाई 4: शिक्षा और मूल्य

मूल्यों की प्रकृति और स्रोत, समकालीन समाज में मूल्य, मूल्यों के लिए शिक्षा की प्रासंगिकता, विद्यालय के सन्दर्भ में मूल्यों का निर्माण, मूल्यों के विकास और पोषण के संदर्भ में शिक्षक की भूमिका, सामाजिक संघर्ष की चुनौतियां और शांति स्थापना।

## शिक्षा 012 : शिक्षार्थी एवं उसका सन्दर्भ (Learner and the Context) - 4 क्रेडिट

### शिक्षण उद्देश्य:

- इसका उद्देश्य अध्येता को मानव विकास की प्रक्रिया और प्रश्नों से परिचित कराना है।
- इसके द्वारा विद्यार्थी संज्ञानात्मक सामाजिक व नैतिक विकास के सैद्धान्तिक समझ को विकसित करेंगे।
- इसके आलोक में भारतीय संदर्भों में बाल्यावस्था और किशोरवस्था की बहुलता को समझ सकेंगे।

### इकाई 1: विकास की अवधारणा

मानव विकास: अवधारणाएँ, परिपक्व विकास व इनसे जुड़ी बहसें, विकास एक प्रक्रिया के रूप में: बहुआयामी, सतत व असतत जीवन पर्यन्त विकास को प्रभावित करने वाले सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ।

### इकाई 2: संज्ञानात्मक विकास

पियाजे का सिद्धान्त: संज्ञानात्मक संरचनाएँ और प्रक्रियाएँ, विकास की अवस्थाएँ, वायगात्स्की का सिद्धान्त: संज्ञान के सामाजिक स्रोत, सांस्कृतिक उपकरण और विकास, भाषा की भूमिका, सीखना और विकास।

### इकाई 3: सामाजिक और नैतिक विकास

स्व और पहचान का विकास, स्वधारणा और आत्म सम्मान का विकास, स्व और अन्य परिवार, हम उम्र साथी और दोस्त, स्व और भावना, इरिक्सन और कोहलबर्ग का सिद्धान्त और इनके निहितार्थ।

### इकाई 4: भारतीय समाज में बड़ा होना

बाल्यावस्था और किशोरवस्था के दौरान विकास की प्रक्रिया, भारतीय संदर्भ में बाल्यावस्था और किशोरवस्था से जुड़े विमर्श।

## शिक्षा 013: समकालीन भारत एवं शिक्षा (Contemporary India and Education) - 4 क्रेडिट

### शिक्षण उद्देश्य:

- यह पाठ्यक्रम भारत की शैक्षिक व्यवस्था के सन्दर्भ में विद्यालयी शिक्षा के विकास के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से परिचित कराता है।

- यह अन्य स्तरों से विद्यालयी शिक्षा के सम्बन्ध और इसके संगठनात्मक ढाँचे के बारे में भी बताता है।
- इसके साथ शिक्षा में गुणवत्ता के बहस से भी संलग्न करता है।

### **इकाई 1: आधुनिक शिक्षा का विकास**

भारतीय शिक्षा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य- वैदिक कालीन, बौद्ध कालीन तथा मध्ययुगीन शिक्षा, वर्ष 1800 से 1947 के दौरान हुए प्रयासों का विहंगमावलोकन, स्वतंत्र भारत में गठित विभिन्न आयोगों और समितियों की संस्तुतियों का अध्ययन, इनका क्रियाकरण और वर्तमान शिक्षा के विकास में उनकी भूमिका।

### **इकाई 2: सांगठनिक और प्रशासनिक संरचना**

पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चशिक्षा के स्तर पर, शिक्षा से जुड़े प्रशासनिक अभिकरण: एम.एच.आर.डी., सी.बी.एस.ई., एन.सी.ई.आर.टी., एस.सी.ई.आर.टी., डायट, बी.आर.सी., सी.आर.सी. आदि।

### **इकाई 3: विद्यालय संगठन व प्रबन्ध**

प्रबन्ध समिति व इसके कार्य, विद्यालय प्रशासन, समुदाय की सहभागिता, विद्यालय बजट, भौतिक संसाधन, पाठ्यचर्या का नियोजन, विद्यालय अनुशासन, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, समय सारणी, विद्यालय सुरक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा, मध्याह्न भोजन व अन्य योजनाएँ।

### **इकाई 4: समकालीन विमर्श**

शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षा के अधिकार कानून 2009 के बाद आए बदलाव, महिलाओं, आदिवासियों एवं हाशिए के समुदाय से जुड़े लोगों की शिक्षा, प्रगतिशील विद्यालयों जैसे राजघाट स्कूल, ओरोविलो, आनन्द निकेतन, शिक्षा और एल.पी.जी.।

## **शिक्षा 014: शिक्षा में सूचना एवं संचारतकनीकी (Information and Communication Technology in Education) - 4 क्रेडिट**

### **शिक्षण उद्देश्य:**

- सूचना एवं संचार तकनीकी की ज्ञान निर्माण में भूमिका की जानकारी प्राप्त करना।
- अभिक्रमित अनुदेशन के व्यवहार और उपयोग की जानकारी प्राप्त करना।
- अभिक्रमित अनुदेशन और संगणक सहाय अनुदेशन द्वारा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का ज्ञान अर्जित करना।
- आई.सी.टी.का ज्ञान प्राप्ति, कौशल विकास, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया, व्यक्तित्व विकास आदि के लिए बहुआयामी उपयोग करने की क्षमता विकसित करना।

### **इकाई 1: परिचय**

- शिक्षा के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी की आवश्यकता और महत्व।
- सूचना एवं संचारतकनीकी के विविध साधन और उनके उपयोग के सम्भाव्यक्षेत्र।
- ज्ञान निर्माण में आई.सी.टी. की भूमिका।

### **इकाई 2: अभिक्रमित अनुदेशन**

- सिद्धान्त, विशेषताएँ और प्रकार (रेखिक और शाखित)।
- अभिक्रमित अनुदेशन का विकास: तैयारी, लेखन, परीक्षण और मूल्यांकन।
- संगणक सहायक अधिगम और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया।

### **इकाई 3: संगणक का प्रयोग**

- संगणक और उससे जुड़े यंत्रों के प्रयोग का कार्यात्मकज्ञान।

- कुछ प्रमुख साफ्टवेयरों के प्रयोग, इनके प्रयोग के आधार पर शिक्षण सहायक सामग्रियों का निर्माण।
- कम्प्यूटर का उपयोग।

#### **इकाई 4: आई.सी.टी. का बहुप्रयोग**

- सीखने-सिखाने में, वृत्तिक विकास में, विद्यालयी प्रबन्धन में।
- ई-लर्निंग/वर्चुअल लर्निंग, ई-रिसोर्सेज, स्मार्ट क्लासरूम, मल्टीमीडिया पैकेज।
- इंटरनेट का प्रयोग, भाषा प्रयोगशाला, नैतिक सरोकार, कुछ प्रमुख आई सी टी आधारित शैक्षिक कार्यक्रम।

## **शिक्षा 015: विद्यालय संगठन एवं प्रशासन (School Organization and administretioon) - 4 क्रेडिट**

### **शिक्षण उद्देश्य:**

- पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा के स्तर पर शिक्षा से जुड़े प्रशासनिक अभिकरण का स्वरूप समझ सकेंगे।
- विद्यालय संगठन और प्रबंध समिति और इसके कार्यों के बारे में जान पाएंगे।
- विद्यालय के भौतिक संसाधन के बारे में जानकारी पाएंगे।
- विद्यालय प्रशासन के कार्य और विद्यालय के बजट के बारे में समझ पाएंगे।
- विद्यालय का अनुशासन और समय सारिणी, विद्यालय की सुरक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा इन सबके बारे में समझ पाएंगे।
- शैक्षिक नेतृत्व का अर्थ जान सकेंगे।
- शिक्षा नेतृत्व के कार्यों के बारे में जान सकेंगे।
- पर्यवेक्षण का अर्थ, प्राचार्य की पर्यवेक्षण में भूमिका और शिक्षक की विद्यालय में भूमिका।

### **इकाई -1: विद्यालयी शिक्षा से जुड़े प्रशासनिक अभिकरण**

शिक्षा प्रशासन के अभिकरण, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD), राष्ट्रीय शिक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT), शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (CTE), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE), शिक्षा और प्रशिक्षण के जिला संस्थान (DIET)।

### **इकाई - 2 : विद्यालय में भौतिक संसाधन**

शैक्षिक प्रशासन, शैक्षिक प्रबंधन, विद्यालय में भौतिक संसाधन, पुस्तकालय।

### **इकाई - 3 : समय सारिणी, अनुशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा**

विद्यालय बजट, अनुशासन, समय सारिणी, स्वास्थ्य शिक्षा।

### **इकाई - 4 : शैक्षिक नेतृत्व**

शिक्षा नेतृत्व का अर्थ, नेतृत्व के लिए आवश्यक गुण, शैक्षिक नेतृत्व आवश्यकता एवं महत्व तथा कार्य, पर्यवेक्षण, शिक्षक की विद्यालय में भूमिका एवं कार्य।

## द्वितीय सेमेस्टर

### शिक्षा 021 :संज्ञान, अधिगम एवं शिक्षण (Cognition, Learning and Teaching) - 4 क्रेडिट

#### शिक्षण उद्देश्य:

- आप सीखने का अर्थ, विभिन्न उपागमों की व्याख्या कर सकेंगे ।
- शिक्षण के निर्माणवादी परिप्रेक्ष्य को जान पाएँगे ।
- बुद्धि की संकल्पना का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
- स्मृति के प्रकार और इसके शिक्षणशास्त्रीय निहितार्थों को समझ सकेंगे ।
- अभिप्रेरणा की प्रकृति को समझते हुए इसके महत्व को जान पाएँगे ।
- विद्यार्थियों में रचनाशीलता को विकसित करने की विभिन्न युक्तियों के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे ।
- मानव विविधता की संकल्पना को समझ पाएँगे ।
- विशिष्ट आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की संकल्पना और प्रकारों को जान पाएँगे ।
- पथ निवासी बच्चे और बाल श्रमिक जैसे हाशिए के वर्गों से आने वाले बच्चों की शैक्षिक चुनौतियों को समझ सकेंगे ।

#### इकाई 1: सीखना

सीखने की परिभाषाएँ, सीखने की प्रकृति, सीखने के सिद्धान्त, सीखने के प्रमुख व्यवहारवादी सिद्धान्त, थार्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त, पावलोव का शास्त्रीय अनुबन्धन का सिद्धान्त, स्किनर का क्रिया प्रस्तुत अनुबन्धन का सिद्धान्त, सीखने के संज्ञानवादी सिद्धान्त, सीखने का समग्रकृति (गिस्टाल्ट) सिद्धान्त ।

#### इकाई 2: सीखने का निर्माणवादी परिप्रेक्ष्य

निर्माणवाद: वैयक्तिक निर्माणवाद और सामाजिक निर्माणवाद का विस्तृत अध्ययन, बुद्धि: अवधारणा, मापन से जुड़े प्रश्न; बहुबुद्धि सिद्धान्त; सीखने के तरीके, स्मृति: प्रकृति, प्रकार, सांवेगिक, अल्पकालिक तथा दीर्घकालिक स्मृति, कार्यात्मक स्मृति, वर्किंग मेमोरी, विस्मरण के कारण, स्मृति बढ़ाने की युक्तियाँ ।

#### इकाई 3: अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा की परिभाषा, अभिप्रेरणात्मक चक्र, अभिप्रेरणा के प्रकार, अभिप्रेरणा के सिद्धान्त, अभिप्रेरित व्यवहार की विशेषताएँ, सृजनशीलता, सृजनशीलता की प्रकृति तथा विशेषताएँ, बच्चों में सृजनशीलता का विकास, समस्या समाधान, समस्या समाधान की वैज्ञानिक विधि, समस्या समाधान की युक्तियाँ, समस्या समाधान को प्रभावित करने वाले कारक ।

#### इकाई 4: मानव विविधता

वैयक्तिक भिन्नता, विद्यार्थियों में वैयक्तिक भिन्नता, विविधता का कक्षा में समावेशन, विशिष्ट आवश्यकता वाले विद्यार्थी, प्रतिभाशाली विद्यार्थी, सृजनशील विद्यार्थी, सांवेगिक और व्यवहारजन्य समस्या से ग्रसित विद्यार्थी, सामाजिक दृष्टि से अपवंचित विद्यार्थी: स्ट्रीट चिल्ड्रेन, सामाजिक दृष्टि से अपवंचित विद्यार्थी: बाल श्रमिक ।

### शिक्षा 22: शैक्षिक आकलन (Educational Assessment) - 4 क्रेडिट

#### शिक्षण उद्देश्य:

- आकलन व मूल्यांकन पद्धति के समकालीन परिप्रेक्ष्य की आलोचनात्मक समझ विकसित कर सकेंगे।

- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में प्रचलित आकलन व मूल्यांकन पद्धति का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- आकलन, मापन, परीक्षण एवं मूल्यांकन के विभेद का सूक्ष्म प्रत्यक्षीकरण कर सकेंगे।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन अवधारणा के विभिन्न घटकों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- अधिगम उद्देश्यों के वर्गीकरण के संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक आयामों की सोदाहरण विवेचना कर सकेंगे।
- उपलब्धि परीक्षण का निर्माण कर सकेंगे।
- सांख्यिकी की विविध प्रविधियों का अर्थ तथा उनका शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग से परिचित कर सकेंगे।

### **इकाई 1: शैक्षिक आकलन व मूल्यांकन का परिप्रेक्ष्य**

आकलन व मूल्यांकन का व्यवहारवादी प्रारूप बनाम निर्माणवादी प्रारूप, आकलन व मूल्यांकन का व्यवहारवादी प्रारूप, आकलन व मूल्यांकन का निर्माणवादी प्रारूप आकलन व मूल्यांकन के व्यवहारवादी तथा निर्माणवादी प्रारूप में विभेद, सीखने का आकलन और सीखने के लिए आकलन में विभेद, प्रचलित मूल्यांकन व आकलन प्रक्रिया का आलोचनात्मक विश्लेषण।

### **इकाई 2: शैक्षिक आकलन व मूल्यांकन की मुख्य अवधारणाएँ**

शैक्षिक आकलन, मापन, परीक्षण, मूल्यांकन, आकलन और मूल्यांकन मापन एवं परीक्षण में अंतर, सतत व व्यापक मूल्यांकन, आकलन के उद्देश्य : ब्लूम टैक्सोनामी का आलोचनात्मक अध्ययन।

### **इकाई 3: आकलन परीक्षणों का निर्माण एवं विभिन्न आकलन प्रविधियाँ**

आकलन परीक्षणों का निर्माण, वस्तुनिष्ठ परीक्षा, वस्तुनिष्ठ परीक्षा के गुण, वस्तुनिष्ठ परीक्षा की सीमाएँ, वस्तुनिष्ठ परीक्षा-प्रकार, निबन्धात्मक परीक्षा, निबन्धात्मक प्रश्न, निबन्धात्मक परीक्षा के गुण, निबन्धात्मक परीक्षा की सीमाएँ, आकलन हेतु कार्य, प्रदत्त कार्य द्वारा आकलन, परियोजना द्वारा आकलन, पोर्टफोलियो, समूह साथी मूल्यांकन समाजमिति, अवलोकन, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन।

### **इकाई 4: प्रदत्त विश्लेषण एवं प्रतिपुष्टि**

बुनियादी सांख्यिकी, केन्द्रिय प्रवृत्ति का मापन, विचलनशीलता का मापन, आँकड़ों का रेखीय प्रदर्शन, सामान्य प्रायिकता वक्र, सहसंबंध, प्रतिशतांक और प्रतिशतांक क्रम: प्रतिपुष्टि देने के तरीके।

## **शिक्षा 23: विद्यालय विषय शिक्षण : हिंदी शिक्षण (Pedagogy of School Subject: Hindi Teaching) - 4 क्रेडिट**

### **शिक्षण उद्देश्य:**

- हिन्दी भाषा के विभिन्न स्वरूपों को समझने में समर्थ होंगे।
- हिन्दी शिक्षण के सिद्धान्तों एवं सूत्रों का प्रयोग करने में समर्थ होंगे।
- हिन्दी शिक्षण के कौशलों के अभ्यास में सामर्थ्य प्राप्त करेंगे।
- हिन्दी शिक्षण उपकरणों का निर्माण एवं प्रयोग करने में समर्थ होंगे।
- हिन्दी पाठ योजनाओं को समझेंगे एवं निर्माण करेंगे।

### **इकाई 1 - परिचय**

भाषा का स्वरूप, समाज में भाषा, भाषा और लिंग, भाषा और अस्मिता, घर की भाषा, बच्चे की भाषा, स्कूल की भाषा, संविधान और शिक्षा समितियों की रिपोर्ट में भाषा, ताराचन्द समिति - (1948), मुदलियार शिक्षा आयोग - (1952-53), कोठारी आयोग - (1964-66), सुनीति कुमार चटर्जी आयोग - 1956;56, वर्तमान पाठ्यचर्या में हिन्दी का स्थान, हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य, मातृभाषा शिक्षण का उद्देश्य, दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य, भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त, अध्ययन का सिद्धान्त, स्वाभाविकता का सिद्धान्त, प्रभाव का सिद्धान्त, रुचि का सिद्धान्त, अभिप्रेरणा का सिद्धान्त, क्रियाशीलता का सिद्धान्त, जीवन समन्वय का सिद्धान्त, वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धान्त ।

### इकाई 2 - भाषा शिक्षण

भाषा का आधार, दार्शनिक आधार, मनोवैज्ञानिक आधार, सामाजिक आधार, भाषा शिक्षण की प्रचलित विधियाँ, व्याकरण-अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि, ढांचागत विधि, संप्रेषणात्मक विधि, व्याख्यान विधि, भारत का बहुभाषिक परिदृश्य, भारत में भाषाएँ एवं भाषा परिवार, भाषा के बहुभाषिकता के आयाम ।

### इकाई - 3 भाषा कौशलें

श्रवण कौशल, श्रवण कौशल अर्थ, श्रवण कौशल शिक्षण का महत्त्व, श्रवण कौशल शिक्षण के उद्देश्य, श्रवण कौशल की विकास क्रियाएँ, श्रवण कौशल शिक्षण के विधियाँ, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का शिक्षण, मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का महत्त्व, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के उद्देश्य, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल की विकास क्रियाएँ, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल शिक्षण के विधियाँ, पठन कौशल, पठन कौशल का अर्थ, पठन कौशल शिक्षण का महत्त्व, पठन कौशल शिक्षण के उद्देश्य, पठन कौशल की विकास क्रियाएँ, पठन कौशल शिक्षण के विधियाँ, लेखन कौशल, लेखन कौशल का अर्थ, लेखन कौशल शिक्षण का महत्त्व, लेखन कौशल शिक्षण के उद्देश्य, लेखन कौशल की विकास क्रियाएँ, लेखन कौशल शिक्षण के विधियाँ ।

### इकाई - 4 पाठ्यक्रम तथा पुस्तकें

माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम, उच्च स्तर का पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पुस्तके, पाठ्यपुस्तकोंका महत्त्व, पाठ्यपुस्तकोंकी विशेषताएं, पाठ्यपुस्तकोंकी समीक्षा, हिंदी में पाठ्य सहगामी क्रियाँ का अर्थ, पाठ्य सहगामी क्रियाँ का महत्त्व, भाषा से सम्बन्धीत पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, श्रव्य-द्रुक साधनों का तात्पर्य, भाषा में द्रुक -श्रव्य साधन ।

### इकाई- 5 विभिन्न विधाओं का शिक्षण

गद्य का शिक्षण, गद्य का स्वरूप, गद्य शिक्षण का उद्देश्य, गद्य का शिक्षण विधियाँ, पद्य का शिक्षण, पद्य का स्वरूप, पद्य शिक्षण का उद्देश्य, पद्य का शिक्षण विधियाँ, नाटक का शिक्षण, नाटक का स्वरूप, नाटक शिक्षण का उद्देश्य, नाटक का शिक्षण विधियाँ, रचना का शिक्षण, रचना का स्वरूप, रचना शिक्षण का उद्देश्य, रचना का शिक्षण विधियाँ, व्याकरण का शिक्षण, व्याकरण का स्वरूप, व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य, व्याकरण का शिक्षण विधियाँ ।

## शिक्षा 23: विद्यालय विषय शिक्षण : मराठी शिक्षण (Pedagogy of School Subject: Marathi Teaching) - 4 क्रेडिट

### शिक्षण उद्देश्य:

- भाषेचा अर्थ उत्पत्ती व स्वरूप या विषयी माहिती अवगत करणे.
- भाषेचे जीवनातील व अभ्यासक्रमातील स्थान व महत्त्व याचे ज्ञान अवगत करणे.
- श्रवण, भाषण, वाचन, लेखनाची उद्दिष्टे व क्षमता अवगत करणे.
- विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण पद्धतीचा विकास करता येणे.
- सूक्ष्म नियोजनाच्या विविध कौशल्याचे अद्यापनातील महत्त्व समजून घेता येणे.
- दैनंदिन पाठ नियोजन, घटक नियोजन, वार्षिक नियोजनाचे ज्ञान व कौशल्य प्राप्त करता येणे.

- विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण (अध्यापन व मुल्यांकन) पद्धतीचा विकास करता येणे.
- परीक्षा पद्धतीचे प्रकार व गुणदोषाचे ज्ञान प्राप्त करता येते.

#### घटक १ : मराठी भाषेची उत्पत्ती, जीवनातील व अभ्यासक्रमातील स्थान व महत्व

भाषेचा अर्थ, स्वरूप व उत्पत्ती. भाषेची वैशिष्ट्ये, तत्व व प्रकार. मराठी भाषा शिक्षणाचे जीवनातील व अभ्यासक्रमातील स्थान व महत्व. मराठी भाषेचा इतर शालेय विषयाशी सहसंबंध (संस्कृत, हिंदी, इंग्रजी, इतर भाषा, सामाजिक शास्त्र, विज्ञान, गणित इ.)

#### घटक २ : भाषा कौशल्य

भाषा कौशल्य (श्रवण, भाषण, वाचन, लेखन), भाषा कौशल्याच्या (श्रवण) अभिव्यक्तीचे महत्व, उद्दिष्ट, विकासाचे उपक्रम, मूल्यमापन, भाषा कौशल्याच्या (भाषण) अभिव्यक्तीचे महत्व, उद्दिष्ट, विकासाचे उपक्रम, मूल्यमापन, भाषा कौशल्याच्या (वाचन) अभिव्यक्तीचे महत्व, उद्दिष्ट, विकासाचे उपक्रम, मूल्यमापन, भाषा कौशल्याच्या (लेखन) अभिव्यक्तीचे महत्व, उद्दिष्ट, विकासाचे उपक्रम, मूल्यमापन.

#### घटक ३ : अध्यापन पद्धती व तंत्र

व्याख्यान, स्पष्टीकरण, कथाकथन, पर्यवेक्षित अभ्यास, संभाषण, भूमिका अभिनय, परिसंवाद, बुद्धीमंथन, आगमन-निगमन, भाषा प्रयोगशाला पद्धती. अध्यापन प्रक्रीयेत आधुनिक अध्यापन पद्धतीचा उपयोग.

#### घटक ४ : अध्यापन अनुभवाचे नियोजन

सूक्ष्म नियोजन, दैनंदिन पाठ नियोजन, घटक नियोजन, वार्षिक नियोजन. मुल्यांकन मूल्यांकनाचे तंत्र, परीक्षा पद्धती - लेखी परीक्षा, तोंडी परीक्षा, प्रश्न प्रकार, परीक्षा पद्धतीचे गुणदोष.

#### घटक ५ : मराठीचा अभ्यासक्रम व पुस्तके

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तरावरील मराठी पाठ्यपुस्तकाचे परीक्षण. पाठ्यपुस्तक व पूरक पुस्तकाचे महत्व व वैशिष्ट्ये. पाठ्यपुस्तकाची समीक्षा व तुलनात्मक विश्लेषण अभ्यासपूरक कार्यक्रम. मराठीत प्रसार माध्यमाची भूमिका.

## शिक्षा 23: विद्यालय विषय शिक्षण : अंग्रेजी शिक्षण (Pedagogy of School Subject: English Teaching) - 4 क्रेडिट

### Aims of English Teaching :

- Understand importance of English in multilingual society.
- Know the factors affecting language learning and describe the role of language in different domains of life.
- Understand about different methods of teaching English like direct method, communicative approach etc.
- Apply the knowledge of these teaching methods in classroom context.
- Know inter-intra correlation between different subjects.
- Develop an understanding about maxims and principles of teaching English.
- Understand the concept of listening, speaking, reading and writing, apply the knowledge of writing composition in different contexts, know about various study skills like note making and note taking, differentiate between types of reading and develop an understanding of referencing.
- Know about the format of lesson plan.
- Plan a lesson on specific topic.
- Know about methods of teaching prose, poetry and grammar.

### **Unit 1: Fundamentals of Language:**

Importance of English in a multi-lingual society; factors affecting language learning: physical, psychological and social: role of language in life: intellectual, emotional, social and cultural development.

### **Unit 2: Method and Approaches:**

Method and approaches: direct method, communicative approach, and constructivist approach: intra - inter correlation: prose, poetry, grammar and composition. History, geography, mathematics, science, economics and commerce: principles and maxims of language teaching

### **Unit 3: Language acquisition Inside/Outside the Classroom:**

Listening: concept, significance and activities to develop listening: speaking: concept, significance and activities to develop speaking; reading: concept, methods (phonic, whole word), types (loud, silent, intensive, extensive and supplementary), techniques to increase speed of reading (phrasing, skimming, scanning, columnar reading, key word reading), Writing: types of composition (guided, free and creative), evaluating compositions, letter writing (formal, informal): supplementary skills: study skills (note taking and making), reference skills (Dictionary, Encyclopaedia and Thesaurus).

### **Unit 4: Aspects of Language Teaching and Learning Resources:**

Planning a lesson, instructional objectives and specifications for prose: techniques (discussion, narration, questioning); methods (story-telling, dramatization); poetry: methods (recitation, song-action), techniques of appreciation: grammar: types (functional, formal), methods (inductive, deductive); learning resources: Computer Assisted Language Learning (CALL), library, language laboratory.

### **Unit 5: Evaluation:**

Types of test items and development of achievement test in English. Meaning and significance of comprehensive and continuous evaluation in English; diagnostic and remedial teaching; identifying learning difficulties in language; dealing with language difficulties of the learner, critical appraisal of an English text book.

## **शिक्षा 23: विद्यालय विषय शिक्षण : संस्कृत शिक्षण (Pedagogy of School Subject: Sanskrit Teaching) - 4 क्रेडिट**

### **शिक्षण उद्देश्य:**

- संस्कृत भाषा शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों का ज्ञान प्राप्त करना ।
- संस्कृत भाषा का अन्य भारतीय भाषाओं के साथ सम्बन्ध का ज्ञान प्राप्त करना ।
- संस्कृत भाषा शिक्षण की आधुनिक पद्धतियों का ज्ञान प्राप्त करना ।
- संस्कृत शिक्षण की विभिन्न विधियाँ एवं शिक्षण विधिओं की उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करना ।
- संस्कृत विभिन्न विधाओं की पाठ योजना का ज्ञान प्राप्त करना ।



- सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, सामाजिक विषयों का परिचय प्राप्त कराना।
- संस्कृत साहित्य का विभिन्न विधाओं का परिचय कराना।

### इकाई -1 संस्कृत भाषा शिक्षण

संस्कृत भाषा का महत्व, वैज्ञानिक महत्व, सांस्कृतिक महत्व, व्यावहारिक महत्व, आधुनिक भारत में संस्कृत का महत्व, संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य, संस्कृत शिक्षण के सामान्य उद्देश्य, संस्कृत भाषा शिक्षण के स्तरानुसार उद्देश्य, प्रारम्भिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य, मध्य स्तर पर संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य, उच्च स्तर पर संस्कृत-शिक्षण के उद्देश्य, संस्कृत शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य, ज्ञानात्मक उद्देश्य, कौशलात्मक उद्देश्य, प्रयोगात्मक उद्देश्य, अभिवृत्त्यात्मक उद्देश्य, विविध समितियों की रिपोर्ट में संस्कृत भाषा, ताराचन्द समिति, मुदलियार शिक्षा आयोग -(1952-53), कोठारी आयोग - (1964-66), सुनीति कुमार चटर्जी आयोग-1956-56, पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा का स्थान, प्रथम दृष्टिकोण, द्वितीय दृष्टिकोण, तृतीय दृष्टिकोण, भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त, अभ्यास का सिद्धान्त, स्वाभाविकता का सिद्धान्त, प्रभाव का सिद्धान्त, रुचि का सिद्धान्त, अभिप्रेरणा का सिद्धान्त, क्रियाशीलता का सिद्धान्त, जीवन समन्वय का सिद्धान्त, वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धान्त।

### इकाई - 2 संस्कृत शिक्षण पद्धतियाँ

संस्कृत शिक्षण पद्धतियाँ, परम्परा पद्धति, भण्डारकर पद्धति, प्रत्यक्ष पद्धति, पाठ्यपुस्तक पद्धति, आगमन-निगमन पद्धति, समाहार पद्धति, हरबार्टीय पंचपदी, संस्कृत भाषा शिक्षण के शिक्षण सूत्र।

### इकाई - 3 संस्कृत भाषा के विभिन्न विधाओं का शिक्षण

गद्य का शिक्षण, गद्य का स्वरूप, गद्य शिक्षण का उद्देश्य, गद्य का शिक्षण विधियाँ, गद्य शिक्षण की पाठ्य योजना निर्माण का सोपान, पद्य का शिक्षण, पद्य का स्वरूप, पद्य शिक्षण का उद्देश्य, पद्य का शिक्षण विधियाँ, पद्य शिक्षण की पाठ्य योजना निर्माण का सोपान, नाटक का शिक्षण, नाटक का स्वरूप, नाटक शिक्षण का उद्देश्य, नाटक का शिक्षण विधियाँ, नाटक शिक्षण की पाठ्य योजना निर्माण का सोपान, रचना का शिक्षण, रचना का स्वरूप, रचना शिक्षण का उद्देश्य, रचना का शिक्षण विधियाँ, रचना शिक्षण की पाठ्य योजना निर्माण का सोपान, व्याकरण का शिक्षण, व्याकरण का स्वरूप, व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य, व्याकरण का शिक्षण विधियाँ, व्याकरण शिक्षण की पाठ्य योजना निर्माण का सोपान।

### इकाई - 4 पाठ्य पुस्तक एवं सहगामी क्रिया

पाठ्यपुस्तकों का अर्थ, पाठ्यपुस्तकों का महत्व, संस्कृत पाठ्य पुस्तकों का उद्देश्य, पाठ्य पुस्तक का गुण, पाठ्य-पुस्तकों की समीक्षा, पाठ्य-सहगामी क्रिया, पाठ्यसहगामी क्रिया का अर्थ, पाठ्यसहगामी क्रियाओं का महत्व, भाषा से सम्बन्धित पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, दृश्य-श्रव्य उपकरण, श्रव्य-दृश्य साधनों का तात्पर्य, भाषा में श्रव्य-दृश्य साधनें, संस्कृत भाषा शिक्षक, संस्कृत भाषा शिक्षक के सामान्य गुण, संस्कृत भाषा शिक्षक के विशिष्ट गुण।

### इकाई - 5 मूल्यांकन पद्धति

मूल्यांकन का संप्रत्यय, मूल्यांकन का अर्थ, मूल्यांकन की परिभाषा, मूल्यांकन के उद्देश्य, मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान, मूल्यांकन का स्वरूप, मूल्यांकन के प्रकार, लिखित परीक्षा, मौखिक परीक्षा, उत्तम परीक्षण के गुण, मूल्यांकन में ध्यान देने योग्य बातें।

## शिक्षा 23: विद्यालय विषय शिक्षण : सामाजिक विज्ञान शिक्षण (Pedagogy of School Subject: Social Science Teaching) - 4 क्रेडिट

### शिक्षण उद्देश्य:

- ज्ञानानुशासन के रूप में सामाजिक सामाजिक विज्ञान के विकास को समझ सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन में अंतर को स्पष्ट कर सकेंगे।

- सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न उपागम के बारे में ।
- सामाजिक विज्ञान के पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित होगी ।
- लोकतंत्र, नागरिकता के विमर्श और सामाजिक विज्ञान शिक्षक के महत्त्व को समझेंगे ।
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विभिन्न विधियों के बारे में ।
- विभिन्न पाठ्य सहगामी गतिविधियों से अवगत होंगे ।

### **इकाई 1- ज्ञानानुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान: परिचय**

ज्ञानानुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान के दार्शनिक व सैद्धान्तिक आधार, सामाजिक विज्ञान का विद्यालयी विषय के रूप में विकास व प्रवृत्तियां, सामाजिक विज्ञान का अन्य विषयों से सम्बन्ध, सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन में अन्तर ।

### **इकाई 2 - विषय ज्ञान समृद्धि**

इस इकाई में विषय ज्ञान समृद्धि के लिए अध्येता के संपर्क केंद्र पर जब अनिवार्य सम्पर्क कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा उस दौरान उन्हें कार्यशाला व गोष्ठियों के माध्यम से उनके विषय ज्ञान को समृद्ध किया जाएगा । इसके अतिरिक्त नीचे कुछ पुस्तकों की सूची दी गई है । अध्येता इन पुस्तकों के माध्यम से भी अपने विषय ज्ञान का संवर्धन कर सकेंगे ।

### **इकाई 3 - सामाजिक विज्ञान शिक्षण**

लक्ष्य व उद्देश्य, माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम व पुस्तकें, सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम विकास के उपागम, सामाजिक विज्ञान के पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन, लोकतंत्र, नागरिकता और मानवाधिकार के विमर्श और सामाजिक विज्ञान शिक्षक के निहितार्थ ।

### **इकाई 4- सीखना-सिखाना**

सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियाँ, पाठ्यपुस्तक विधि, व्याख्यान विधि, कहानी विधि, नाट्य रूपांतरण विधि, तुलनात्मक विधि, सामाजिक विज्ञान शिक्षण में सम सामयिक राजनैतिक घटनाओं का प्रयोग, पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ, क्षेत्र भ्रमण, फिल्म स्क्रीनिंग, सर्वेक्षण ।

### **इकाई 5- आकलन**

सतत और व्यापक मूल्यांकन: उद्देश्य सिद्धान्त और आवश्यकता, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की चुनौतियाँ, सीखने के लिए आकलन, आकलन का वर्तमान परिदृश्य, रचनात्मक आकलन, योगात्मक आकलन, रचनात्मक व योगात्मक आकलन में अन्तर, आकलन के लिए उपकरणों का विकास ।

## **शिक्षा 23: विद्यालय विषय शिक्षण : जीव विज्ञान शिक्षण (Pedagogy of School Subject: Biology Teaching) - 4 क्रेडिट**

### **शिक्षण उद्देश्य:**

- विज्ञान की प्रकृति को समझते हुए उसके अर्थ को स्पष्ट करने में सक्षम हो पाएँगे ।
- अनुशासन के रूप में जीव विज्ञान की प्रकृति को समझेंगे ।
- माध्यमिक तथा उच्च स्तर के जीव विज्ञान पाठ्यक्रम के विषयगत ज्ञान समृद्धि के लिए परिप्रेक्ष्य निर्माण की आवश्यकता तथा महत्त्व की आलोचनात्मक समझ विकसित कर पाएँगे ।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005) के सन्दर्भ में विज्ञान शिक्षण की भूमिका एवं जीव विज्ञान के स्थान जान पाएँगे ।

### **इकाई 1- जीव विज्ञान: एक अनुशासन**

विज्ञान क्या है ?, विज्ञान की प्रकृति, वैज्ञानिक विधि, वैज्ञानिक विधि के प्रयोग, वैज्ञानिक विधि की आवश्यकता एवं इससे उत्पन्न प्रवृत्तियां, वैज्ञानिक विधि के गुण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अभिवृत्ति, विज्ञान की शाखाएं, जीव विज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विद्यालय पाठ्यक्रम में जीव विज्ञान का महत्व एवं स्थान, जीव विज्ञान का विज्ञान की अन्य शाखाओं से सम्बन्ध, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं समाज में अन्तःक्षेपण।

### **इकाई 2 - जीव विज्ञान पाठ्यक्रम के विषयगत ज्ञान की समृद्धि के लिए परिप्रेक्ष्य का विकास**

माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर के जीव विज्ञान पाठ्यक्रम पर आधारित, विषयगत ज्ञान को केंद्र में रखकर परिप्रेक्ष्य का विकास करने की आवश्यकता तथा महत्व, विषय ज्ञान की समृद्धि के लिए विज्ञान कार्यगोष्ठी/संगोष्ठी, कार्यशाला, विज्ञान क्लब आदि गतिविधियों का आयोजन, विज्ञान कार्यगोष्ठी/संगोष्ठी, विज्ञान कार्यशाला, विज्ञान क्लब।

### **इकाई 3 - जीव विज्ञान शिक्षण**

विद्यालय स्तर पर विज्ञान के सीखने-सिखाने के लक्ष्य एवं उद्देश्य, विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य, विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य, विद्यालय स्तर पर विज्ञान शिक्षण के लिए निर्धारित उद्देश्य, उद्देश्यों के वर्गीकरण का आधार, जीव विज्ञान के निर्धारित उद्देश्यों का विशिष्टीकरण अथवा अधिगम परिणाम, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में विज्ञान शिक्षण की भूमिका एवं विज्ञान का स्थान, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में विज्ञान शिक्षण की भूमिका, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में विज्ञान का स्थान, जीव विज्ञान शिक्षण के प्रचलित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन, जीव विज्ञान शिक्षण के प्रचलित पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन, नवाचार आधारित पाठ्यक्रम, विज्ञान के प्रचार में स्वयं सेवी संगठनों की भूमिका, जीव विज्ञान के सन्दर्भ में निर्माणवाद की व्याख्या और निहितार्थ, विज्ञान के निर्माणवाद कक्षा के विशेषता।

### **इकाई- 4 विज्ञान में सीखना-सिखाना**

वैज्ञानिक घटनाओं के प्रति बच्चों की समझ, बच्चों की वैकल्पिक अवधारणाएं और इसके शिक्षा शास्त्रीय निहितार्थ, विज्ञान सीखने सिखाने में प्रेक्षण-प्रयोग खोज और अन्तः प्रज्ञा (सूक्ष्म) की भूमिका, शिक्षण शास्त्रीय युक्तियां: समस्या समाधान, खोज प्रदर्शन, प्रयोग, सामूहिक गतिविधियां, क्षेत्र अध्ययन, अवलोकन, वैयक्तिक अनुदेशन कार्यक्रम, कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन, विज्ञान मेला व विज्ञान प्रोजेक्ट, विज्ञान सीखने-सिखाने में आई. सी. टी. का प्रयोग, ई-लर्निंग, निकटवर्ती परिवेश से सीखने-सिखाने के संसाधनों को खोजना और कक्षा में उनका प्रयोग करना, विज्ञान किट का निर्माण, क्षेत्र अवलोकन, हरबेरियम का निर्माण, विज्ञान में प्रायोगिक कार्य के द्वारा सीखना-सिखाना।

### **इकाई 5 विज्ञान में आकलन**

आकलन का अर्थ, निरंतर और व्यापक मूल्यांकन, मूल्यांकन: अर्थ एवं परिभाषा, मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर, मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान, मूल्यांकन के उद्देश्य, विज्ञान में मूल्यांकन : अध्यापक निर्मित उपलब्धि परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण का अर्थ, उपलब्धि परीक्षणों का महत्व, उपलब्धि परीक्षणों की विशेषताएं, उपलब्धि परीक्षणों की परिसीमाएं, जीव विज्ञान में एक उपलब्धि परीक्षण का निर्माण, परीक्षा प्रणाली, निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली, वस्तुनिष्ठ परीक्षा प्रणाली, विज्ञान में आकलन के विभिन्न तरीके, प्रदत्त कार्य द्वारा आकलन, परियोजना द्वारा आकलन, सृजनात्मक अभिव्यक्ति एवं आकलन।

## **शिक्षा 23: विद्यालय विषय शिक्षण : भौतिकीय विज्ञान शिक्षण (Pedagogy of School Subject: Physical Science Teaching) - 4 क्रेडिट**

### **शिक्षण उद्देश्य:**

- विज्ञान की प्रकृति को समझते हुए उसके अर्थ को स्पष्ट करने में सक्षम हो जाएंगे।
- अनुशासन के रूप में भौतिकीय विज्ञान की प्रकृति को समझेंगे।

- एक अनुशासन के रूप में भौतिकीय विज्ञान के विकास को समझते हुए वर्तमान में विद्यालयों में इसके स्थान एवं महत्व को जानेंगे।
- भौतिकीय विज्ञान का विज्ञान की अन्य शाखाओं से सह-सम्बन्ध समझेंगे तथा भौतिकीय विज्ञान शिक्षण के लिए समन्वित उपागम (Integrated Approach) का विकास करेंगे।
- माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान पाठ्यक्रम के विषयगत ज्ञान की समृद्धि के लिए परिप्रेक्ष्य के निर्माण की आवश्यकता तथा महत्व की आलोचनात्मक समझ विकसित कर सकेंगे।
- विज्ञान पाठ्यक्रम के विषय ज्ञान को केंद्र में रखकर परिप्रेक्ष्य का विकास करने के लिए विद्यालय में आयोजित की जानेवाली गतिविधियों जैसे संगोष्ठी, कार्यशाला, विज्ञान क्लब आदि के संगठन तथा आयोजन की समझ विकसित कर सकेंगे।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005) के सन्दर्भ में विज्ञान शिक्षण की भूमिका एवं भौतिकीय विज्ञान के स्थान को जान पाएंगे।
- नवाचार आधारित पाठ्यक्रम जैसे होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानेंगे।
- विज्ञान के प्रचार-प्रसार में स्वयं सेवी संगठन की भूमिका जैसे - जवाहर बाल भवन, किशोर भारती, विक्रम साराभाई सामुदायिक विज्ञान केंद्र, आंध्र प्रदेश विज्ञान केंद्र आदि के बारे में जानेंगे।
- विज्ञान शिक्षण की विभिन्न विधियों के प्रमुख चरणों, गुणों तथा सीमाओं का वर्णन कर सकेंगे।
- विज्ञान शिक्षण हेतु प्रत्यक्ष अवलोकन, प्रयोग एवं खोज की भूमिका के विषय में समझ विकसित कर सकेंगे।

#### **इकाई -1 भौतिकीय विज्ञान: एक अनुशासन**

वैज्ञानिक विधि, वैज्ञानिक प्रयोग, वैज्ञानिक विधि की आवश्यकता एवं इसकी प्रवृत्तियां, वैज्ञानिक विधि के गुण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अभिवृत्ति, विज्ञान की शाखाएँ, भौतिकीय विज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विद्यालय पाठ्यक्रम में भौतिकीय विज्ञान का महत्व एवं स्थान, भौतिकीय विज्ञान का विज्ञान की अन्य शाखाओं से सम्बन्ध, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं समाज में अन्तःक्षेपण।

#### **इकाई-2 विज्ञान पाठ्यक्रम के विषयगत ज्ञान की समृद्धि के लिए परिप्रेक्ष्य का विकास**

माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान पाठ्यक्रम पर आधारित विषयगत ज्ञान को केंद्र में रखकर परिप्रेक्ष्य का विकास करने की आवश्यकता तथा महत्व, गतिविधियों का आयोजन विषय ज्ञान की समृद्धि के लिए विज्ञान कार्यगोष्ठी/संगोष्ठी, कार्यशाला, विज्ञान क्लब आदि विज्ञान कार्यगोष्ठी/संगोष्ठी, विज्ञान कार्यशाला, विज्ञान क्लब।

#### **इकाई-3 भौतिकीय विज्ञान का शिक्षण**

विद्यालय स्तर पर विज्ञान के सीखने-सिखाने के लक्ष्य एवं उद्देश्य, विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य, विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य, विद्यालय स्तर पर विज्ञान शिक्षण के लिए निर्धारित उद्देश्य, उद्देश्यों के वर्गीकरण का आधार, भौतिकीय विज्ञान के निर्धारित उद्देश्यों का विशिष्टीकरण अथवा अधिगम परिणाम, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में विज्ञान शिक्षण की भूमिका एवं विज्ञान का स्थान, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में विज्ञान शिक्षण की भूमिका, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में विज्ञान का स्थान, भौतिकीय विज्ञान शिक्षण के प्रचलित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन, भौतिकीय विज्ञान शिक्षण के प्रचलित पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन, नवाचार आधारित पाठ्यक्रम, विज्ञान के प्रचार में स्वयं सेवी संगठनों की भूमिका, भौतिकीय विज्ञान के सन्दर्भ में निर्माणवाद की व्याख्या और निहितार्थ, विज्ञान के निर्माणवाद कक्षा की विशेषता।

#### **इकाई- 4 : सीखना-सिखाना**

वैज्ञानिक घटनाओं के प्रति बच्चों की समझ, बच्चों की वैकल्पिक अवधारणाएँ और इसके शिक्षा शास्त्रीय निहितार्थ, विज्ञान सीखने-सिखाने में प्रेक्षण-प्रयोग, खोज और अन्तः प्रज्ञा (सूक्ष्म) की भूमिका, शिक्षण शास्त्रीय युक्तियां, समस्या

समाधान, खोज प्रदर्शन, प्रयोग, सामूहिक, गतिविधियाँ, क्षेत्र अध्ययन, अवलोकन, वैयक्तिक अनुदेशन कार्यक्रम, कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन, विज्ञान मेला व विज्ञान प्रोजेक्ट, विज्ञान सीखने-सिखाने में आई. सी. टी. का प्रयोग, ई-लर्निंग, निकटवर्ती परिवेश से सीखने-सिखाने के संसाधनों को खोजना और कक्षा में उनका प्रयोग करना, विज्ञान किट का निर्माण, विज्ञान में प्रायोगिक कार्य के द्वारा सीखना-सिखाना।

### **इकाई -5 विज्ञान में आकलन**

आकलन का अर्थ, सतत और व्यापक मूल्यांकन, मूल्यांकन: अर्थ एवं परिभाषा, मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर, मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान, मूल्यांकन के उद्देश्य, विज्ञान में मूल्यांकन : अध्यापक निर्मित उपलब्धि परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण का अर्थ, उपलब्धि परीक्षणों का महत्व, उपलब्धि परीक्षणों की विशेषताएँ, उपलब्धि परीक्षणों की परिसीमाएँ, भौतिकीय विज्ञानों में एक उपलब्धि परीक्षण का निर्माण, परीक्षा प्रणाली, निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली, वस्तुनिष्ठ परीक्षा प्रणाली, विज्ञान में आकलन के विभिन्न तरीके, प्रदत्त कार्य (Assignment) द्वारा आकलन, परियोजना (Project) द्वारा आकलन, सृजनात्मक अभिव्यक्ति (Creative Expression) एवं आकलन।

## **शिक्षा 23: विद्यालय विषय शिक्षण : गणित शिक्षण (Pedagogy of School Subject: Mathematics Teaching) - 4 क्रेडिट**

### **शिक्षण उद्देश्य:**

- गणित का इतिहास और भारतीय गणितज्ञों एवं पाश्चात्य गणितज्ञों के योगदान को समझ पाएँगे।
- गणित की प्रकृति को समझते हुए उसके अर्थ को स्पष्ट करने में सक्षम हो जाएँगे।
- गणित विषय का अन्य विषयों के साथ सह-संबंध को समझेंगे।
- गणितीय संरचनाओं के निर्माण को समझते हुए गणित को मानव रचित विषय के रूप में समझ पाएँगे।
- पियाजे, ब्रुनर और वाइगोट्स्की के अंतर्दृष्टि चिंतन का विश्लेषण कर सकेंगे।
- गणित के विभिन्न प्रसंगों का शैक्षिक विश्लेषण कर सकेंगे।
- गणित शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न शिक्षण विधियों का शिक्षण में उपयोग कर सकेंगे।
- गणित शिक्षण की विभिन्न विधियों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- गणित शिक्षण में विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर विभिन्न प्रसंगों के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों का चुनाव कर सकेंगे।
- पाठ योजना का निर्माण करना सीख पाएँगे।
- अंकगणित शिक्षण के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों का चयन कर पाएँगे।
- बीजगणित शिक्षण के लिए उपयुक्त निर्देशन युक्तियों का चयन कर पाएँगे।
- रेखागणित शिक्षण के लिए उपयुक्त निर्देशन युक्तियों का चयन कर पाएँगे।
- गणित के अन्य प्रसंगों जैसे त्रिकोणमिति एवं सांख्यिकी के लिए उपयुक्त शिक्षण युक्तियों का चयन कर पाएँगे।
- गणित के विभिन्न शाखाओं के शिक्षण के महत्व और उपयोगिता को समझ पाने में सक्षम हो सकेंगे।

### **इकाई -1: गणितीय संप्रत्यय, उद्देश्य और चिंतन का परिचय**

गणित शिक्षण पर विशेष ध्यान देते हुए गणित का इतिहास, भारतीय गणितज्ञों का योगदान, गणित का अर्थ, गणित का क्षेत्र, गणित की प्रकृति, गणित शिक्षण के उद्देश्य और प्राप्य उद्देश्य, गणित का अन्य विषयों के साथ सह-सम्बंध, पैटर्न की रचना जानना व सामान्यीकृत पैटर्न के रूप में गणित का अध्ययन, आकृतियों का पैटर्न, सांख्यिकीय पैटर्न, अमूर्त पैटर्न की पहचान और विश्लेषण, गणित को मानव द्वारा रचित विषय के रूप में समझना, गणितीय संरचना (structure) का निर्माण, स्वयंसिद्धियाँ (Axioms), अभीगृहीतियाँ (Postulates), प्रमाण (Proof): प्रमाण क्या है ? प्रमाण के विभिन्न विधियाँ: प्रत्यक्ष (Direct), अप्रत्यक्ष (Indirect), विपरीत उदाहरण (Counter Examples) और आगमन के द्वारा प्रमाण, दिन-प्रतिदिन प्रयुक्त गणित, बहुसांस्कृतिक गणित, गणित में सौंदर्य सिद्धांत।

### **इकाई-2 गणित सीखना, पाठ्यक्रम और विधियाँ**

संज्ञानात्मक विकास का अर्थ, जीन पियाजे, जे. एस. ब्रुनर, वाइगोट्स्की, पेडागोजिकल विश्लेषण, शिक्षण-बिंदुओं के निर्धारण की आवश्यकता, शिक्षण-बिंदुओं को निर्धारण करने की विधि, पेडागोजिकल विश्लेषण (Pedagogical Analysis) प्रकरण: समुच्चय, प्रकरण : अनुपात एवं समानुपात, गणित शिक्षण की विधि, व्याख्यान विधि, आगमन विधि, निगमन विधि, विश्लेषण विधि, संश्लेषण विधि, प्रदर्शन विधि, पूछताछ और खोज विधि, समस्या समाधान विधि, प्रोजेक्ट विधि, प्रयोगशाला विधि।

### **इकाई-3 पाठ्यक्रम और योजना**

इकाई योजना तथा उसका प्रारूप, इकाई योजना की परिभाषा, इकाई-योजना की विशेषताएँ, इकाई योजना के उद्देश्य, इकाई योजना के गुण, इकाई योजना के दोष, इकाई परीक्षण का प्रारूप, पाठ योजना, पाठ-योजना का आशय एवं परिभाषाएँ, अच्छी पाठ-योजना की विशेषताएँ, पाठ योजना की आवश्यकता, पाठ योजना का महत्व, पाठ योजना का निर्माण, माध्यमिक स्तर के गणित के विभिन्न विषयों के लिए उपयुक्त निर्देशन युक्तियों का चयन करना, अंकगणित-शिक्षण, बीजगणित-शिक्षण, रेखागणित शिक्षण, त्रिकोणमिति शिक्षण, सांख्यिकी शिक्षण।

### **इकाई - 4 हम आसानी से गणित कैसे सिखाए ?**

सीखने की संस्कृति, कक्षा में सक्रिय वातावरण का निर्माण, कक्षा में विचारों को साझा करना तथा खोज करना, नव परिवर्तनशील प्रक्रिया को बढ़ावा देना, गणित की कक्षा में संचार की भूमिका, कक्षा में गणितज्ञों का समूह बनाना: गणितीय क्लब, गणितीय चिंतन में श्रव्य-दृश्य सामग्री, गणित से जुड़ी कहानियाँ, गणित में तकनीकी का उपयोग, गणित की प्रकृति और गणित सीखने के विषय में शिक्षक के विश्वास और ज्ञान का गणित शिक्षण में महत्व, विद्यालयी गणित की उत्कृष्टता में शिक्षक की भूमिका।

### **इकाई - 5 गणित शिक्षण में मूल्यांकन**

मापन और मूल्यांकन की अवधारणा, मापन का प्रत्यय, मूल्यांकन का प्रत्यय, मूल्यांकन उपकरण: अर्थ और आवश्यकता, मापन तथा मूल्यांकन की तकनीकें, मापन व मूल्यांकन के उपकरण, नैदानिक परीक्षण और उपचारात्मक शिक्षण, व्यक्तिनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ परीक्षण, संरचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन सतत और व्यापक मूल्यांकन, निकष संदर्भित और मानक संदर्भित मूल्यांकन ब्लू-प्रिंट की रचना और गणित में शिक्षक निर्मित उपलब्धि परीक्षण का निर्माण।

## **शिक्षा 23: विद्यालय विषय शिक्षण : स्वास्थ्य एवं योग शिक्षा (Pedagogy of School Subject: Health and Yoga Teaching) - 4 क्रेडिट**

### **शिक्षण उद्देश्य :**

- विद्यार्थियों की शारीरिक क्षमता के महत्व के बारे में बताना।
- स्वास्थ्य जीवन शैलीसे सम्बंधित स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं की जानकारी।

- विद्यालय व विश्वविद्यालय स्तर पर होने वाले विभिन्न प्रतियोगिता के बारे में जानना ।
- स्वास्थ्य के कार्यक्रमों को आयोजित करने सम्बंधि सिद्धांतो की जानकारी देना।

### **इकाई 1: स्वास्थ्य एवं योग शिक्षा**

स्वास्थ्य का अर्थ, परिभाषा, स्वास्थ्य के प्रमुख आयाम, स्वास्थ्य और सेहत का आरेखीय प्रतिरूप, स्वास्थ्य शिक्षा की अवधारणा, स्वास्थ्य शिक्षा के सिद्धांत, संतुलित आहार क्या है? संक्रामक रोग तथा इससे बचाव के तरीके व उपचार।

### **इकाई 2: शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान**

शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान का अर्थ व परिभाषा, पाचन संस्था : कार्य तथा व्यायाम का प्रभाव, मासपेशी संस्था : कार्य तथा व्यायाम का प्रभाव, रक्त परिचरण संस्थान: उच्च रक्त चाप, निम्न रक्त चाप, रक्त वर्ग।

### **इकाई 3: मनोरंजन एवं प्राथमिक उपचार**

मनोरंजन: परिचय, अर्थ एवं इसके प्रकार, उद्देश्य। चक्र स्पर्धाएं, अन्तसंस्थान एवं अंतर्संस्थान प्रतियोगिता, खेल चोटें, प्राथमिक उपचार।

### **इकाई 4: योग शिक्षा**

योग का अर्थ एवं परिभाषा, अष्टांग योग-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधी। विभिन्न योगासन एवं उनके लाभ, योग का वर्तमान जीवन में महत्व।

## **शिक्षा 23: विद्यालय विषय शिक्षण : प्रदर्शनकारी कला एवं शिक्षा (Pedagogy of School Subject: Performing arts and education) - 4 क्रेडिट**

### **शिक्षण उद्देश्य:**

- शिक्षा के सन्दर्भ में प्रदर्शनकारी कलाओं का स्थान एवं महत्व के सन्दर्भ में समझ पाएँगे।
- कला का अर्थ, परिभाषा, तत्व, संक्षिप्त इतिहास नाट्यकला के सन्दर्भ में जान पाएँगे।
- संगीत का उद्भव ( भौतिक , अतिभौतिक, मानसिक अथवा मनोवैज्ञानिक) के सन्दर्भ में अपनी समझ विकसित कर पाएँगे।
- वैदिक काल में संगीत, जैन काल, बौद्ध काल, पौराणिक काल, स्मृति ग्रंथों में संगीत, मौर्य काल, कनिष्क काल, गुप्त काल, यवन काल, खिलजी युग, मुगल काल के सन्दर्भ में समझ पाएँगे।
- भारतीय नृत्य, संगीत एवं नाट्य के प्रकार एवं परिचयके सन्दर्भ में जान पाएँगे।
- हिन्दुस्तानी गायन शैलियां (कृति) दक्षिण गायन शैलियां ( जनभ ,टप्पा ,ठुमरी ,तराना ,खयाल ,ध्रुपद या ध्रुवपद) ( कीर्तनम ,पदम् तथा जावलि ,तिल्लाना ,पल्लवी-तानम-रागम सन्दर्भ में समझ पाएँगे।
- स्वर, ठाठ एवं राग-शास्त्र का संक्षिप्त परिचय सन्दर्भ में समझ पाएँगे।
- विद्यालयी स्तर पर प्रदर्शनकारी कलाओं का प्रयोग शिक्षा के विशेष संदर्भ में सन्दर्भ में समझ पाएँगे।

### **इकाई 1 - प्रदर्शनकारी कलाएं**

शिक्षा के सन्दर्भ में प्रदर्शनकारी कलाओं का स्थान एवं महत्व, कलाएं प्रदर्शन के सन्दर्भ में, कला का अर्थ, कला की परिभाषा, कला के तत्व, संक्षिप्त इतिहास नाट्यकला।

### **इकाई 2 - संगीत का उद्भव ( भौतिक, अतिभौतिक, मानसिक अथवा मनोवैज्ञानिक )**

संगीत की विकास यात्रा सिंधु-वैदिक सभ्यता से लेकर आधुनिक युग तक, वैदिक काल में संगीत, जैन काल, बौद्ध काल, पौराणिक काल, स्मृति ग्रंथों में संगीत, मौर्य काल, कनिष्क काल, गुप्त काल, यवन काल, खिलजी युग, मुगल काल,

प्रायोगिक अभ्यास (गायन)-स्वर अभ्यास, स्वरों पर दिए गए चिन्हों का स्पष्टीकरण, (भातखंडे पद्धति), स्वर बोध- (अभ्यास), प्रायोगिक अभ्यास (नाट्य)-स्वर अभ्यास, वहन शक्ति, स्वरमान, भ्रमण सीमा और लोच, प्रायोगिक प्रदर्शन गायन, प्रायोगिक प्रदर्शन नाट्य।

### **इकाई 3 - भारतीय नृत्य, संगीत एवं नाट्य के प्रकार एवं परिचय**

भारतीय नृत्य, संगीत एवं नाट्य के प्रकार एवं परिचय भारतीय नृत्य कला, भरत नाट्यम, कथकलि, मणिपुरी, कथक, कुचिपुड़ी, ओडिसी, मोहिनीअट्टम, भारतीय संगीत के प्रकार, हिन्दुस्तानी संगीत, कर्नाटक संगीत, हिन्दुस्तानी गायन शैलियां (ध्रुपद या ध्रुवपद, खयाल, तराना, तुमरी, टप्पा, भजन) दक्षिण गायन शैलियां (कृति, रागम-तानम-पल्लवी, तिल्लाना, पदम् तथा जावलि, कीर्तनम), वाद्यों के प्रकार (तत वाद्य, सुषिर वाद्य, अवनद्ध वाद्य, घन वाद्य), नाट्य के प्रकार एवं परिचय (नाटक, प्रकरण, समवकार, ईहामृग, डिम, भाण, वीथी, प्रहसन, उत्सृष्टिकांक, लोक संगीत के विभिन्न प्रकार, विभिन्न प्रदेशों की लोकप्रिय गीत-शैली (धुमें) व नृत्य, प्रायोगिक अभ्यास- पद गायन एवं लय-1, प्रायोगिक अभ्यास-2, नाट्य के विभिन्न अवयव या घटक, प्रायोगिक प्रदर्शन।

### **इकाई 4 - स्वर, ठाठ एवं रागशास्त्र का संक्षिप्त परिचय**

स्वर, शुद्ध स्वर, शुद्ध तीव्र तथा विकृत (कोमल) स्वर, थाट, दस थाट तथा उनके सांकेतिक चिन्ह, राग शास्त्र और उसका संक्षिप्त परिचय, राग के कुछ आवश्यक तथ्य, प्रायोगिक- विभिन्न रागों को सुनना-सुनाना, एक परिचय, नाट्य में धर्मिताएं, काकु प्रयोग नाट्य एवं गायन के विशेष सन्दर्भ में, विद्यालयी स्तर पर प्रदर्शनकारी कलाओं का प्रयोग शिक्षा के विशेष संदर्भ में, पूर्व प्राथमिक स्तर, प्राथमिक स्तर, उच्च प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर, उच्चतर माध्यमिक स्तर।

## **शिक्षा 24: विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व (School Management and Leadership) - 4 क्रेडिट**

### **शिक्षण उद्देश्य**

- विद्यालय प्रबंधन की अवधारणा एवं क्षेत्र के विषय में अपनी समझ का विकास कर पाएँगे।
- प्रबंधन के विभिन्न सिद्धान्तों को समझ पाएँगे।
- प्रबंधन के विभिन्न चरणों के बारे में जान पाएँगे।
- विद्यालय का वार्षिक कैलेंडर, दैनिक कार्यक्रम की योजना, समय सारणी, स्टाफ मीटिंग आदि के बारे में जान पाएँगे।
- विद्यालयों में संसाधनों का प्रबंधन किस तरह से होता है, इसके बारे में जान पाएँगे।
- इस इकाई का पहला उद्देश्य छात्रों को विद्यालय संगठन सम्बन्धी जानकारी से परिचित कराना है।
- इकाई का दूसरा उद्देश्य विद्यालय के अन्य शैक्षिक संस्थाओं से सम्बन्ध की जानकारी छात्रों को देना है।

### **इकाई 1: विद्यालय प्रबंधन**

विद्यालय प्रबंधन की अवधारणा एवं क्षेत्र, प्रबंधन का अर्थ एवं परिभाषा, प्रबंधन की विशेषताएँ, प्रबंधन अथवा प्रशासन की परिभाषा, प्रबंधन के आयाम, प्रबंधन की अवधारणा, प्रबंधन का क्षेत्र, भारत में विद्यालय प्रबंधन, विद्यालय प्रबंधन के विभिन्न चरण, प्रबंधन के सिद्धान्त-क्लासिकल, नियो-क्लासिकल एवं आधुनिक।

### **इकाई 2: विद्यालय प्रबंधन की गतिविधियाँ**

वार्षिक कैलेंडर, दैनिक कार्यक्रम की योजना, समय सारणी, स्टाफ मीटिंग, छात्रों की समस्याएँ, विद्यालय संसाधनों का प्रबंधन।



### इकाई 3: विद्यालय संगठन

विद्यालय संगठन अर्थ, विशेषताएँ, क्षेत्र, विद्यालय संगठन तथा प्रशासन, विद्यालय का अन्य शैक्षिक संस्थानों से सम्बन्ध, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), राज्य शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT), राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE), अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय (CTE)।

### इकाई 4 : नेतृत्व

नेतृत्व का अर्थ, प्रभुत्व और नेतृत्व में अंतर, प्रशासन और नेतृत्व में अंतर, नेतृत्व की विशेषताएँ, नेतृत्व के लिए आवश्यक गुण, शैक्षिक नेतृत्व का अर्थ, शैक्षिक नेतृत्व में बाधाएँ, नेतृत्व की संभावनाएँ, संगठन में संसाधनों का प्रबंधन, शैक्षिक प्रशासन और प्रबंधन में समुदाय की सहभागिता।

## शिक्षा 25: विद्यालय संपर्क कार्यक्रम (School Contact Programme) - 4 क्रेडिट

विद्यालय संपर्क कार्यक्रम अध्यापक शिक्षा का एक अभिन्न अंग है। यह अध्येताओं को शिक्षण अभ्यास से परिचित कराता है तथा तत्संबंधी मार्गदर्शन भी करता है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत वे माध्यमिक/ उच्च माध्यमिक विद्यालय में नियमित रूप से होने वाली सभी गतिविधियों का अवलोकन करेंगे, वहाँ के शिक्षक, छात्र एवं अन्य संबंधित लोगों से अंतः क्रिया करेंगे एवं शिक्षण योजना का निर्माण भी करेंगे। इसके साथ ही वे निम्नलिखित कार्यों का व्यवस्थित रूप से निष्पादन करेंगे -

- कक्षा शिक्षण अवलोकन एवं रिपोर्ट लेखन करना।
- विद्यालय परिवेश व अन्य गतिविधियों का अवलोकन रिपोर्ट लेखन एवं परियोजना तैयार करना।
- पाठ सहगामी क्रिया का आयोजन तथा प्रबंधन करना।
- विद्यालय दैनिकी

इस कार्यक्रम में विद्यालय अवलोकन से प्राप्त अनुभवों द्वारा अध्येता अपने विषय शिक्षण के ज्ञान और समझ को परिमार्जित करेंगे तथा पूर्ण आत्मविश्वास के साथ परवर्ती शिक्षण अभ्यास कार्यक्रम के विभिन्न गतिविधियों का प्रभावशाली रूप में निष्पादन करेंगे।

## तृतीय सेमेस्टर

## शिक्षा 31: विद्यालय शिक्षण अनुभव कार्यक्रम (18 सप्ताह) (School Internship Programme) - 16 क्रेडिट

इसके अंतर्गत अध्येता विद्यालय में नियमित शिक्षक की भांति अध्यापन करेंगे एवं विद्यालय के समस्त क्रियाकलाप में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करेंगे। इस दौरान छात्राध्यापकों से अपेक्षा रहेगी कि वे पाठ योजना बनाना, विद्यालय के अन्य पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के लिए योजना बनाना, शिक्षण, मूल्यांकन, विद्यालय के अन्य शिक्षकों, छात्रों, उनके

अभिभावकों एवं समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ सार्थक विमर्श करते हुए विद्यालयी अनुभव को समग्रता में ग्रहण करेंगे। उनके मूल्यांकन के निम्नलिखित मापदंड होंगे: सूक्ष्म शिक्षण, पाठयोजना निर्माण एवं क्रियान्वयन, उपलब्धि परीक्षण रिपोर्ट, प्रकरण अध्ययन, क्रियात्मक अनुसंधान, विद्यालय अभिलेखों का विवरण एवं प्रस्तुति, मनोविज्ञान प्रयोगात्मक, समुदाय के साथ अंतर्क्रिया (रिपोर्ट)।

## शिक्षा 32: विद्यालय विषय शिक्षण (प्रायोगिक) Pedagogy of School Subject (Practical) - 4 क्रेडिट

इस सत्र के अंत में एक प्रायोगिक परीक्षा ली जाएगी जिसमें एक पाठ योजना बनाकर पढ़ाना होगा। इस पर 50 अंक होंगे। इसमें 25 अंक आंतरिक परीक्षक एवं 25 अंक बाह्य परीक्षक द्वारा मूल्यांकित किये जायेंगे। शेष 50 अंक की मौखिक परीक्षा होगी। उनके मूल्यांकन के निम्नलिखित मापदंड होंगे: सूक्ष्म शिक्षण, उपलब्धि परीक्षण रिपोर्ट, प्रकरण अध्ययन, क्रियात्मक अनुसंधान, विद्यालय अभिलेखों का विवरण एवं प्रस्तुति, सामुदायिक कार्य, मनोविज्ञान प्रयोगात्मक, बी.एड. पाठ्यक्रम से सम्बंधित जानकारी आदि।

### चतुर्थ सेमेस्टर

## शिक्षा 041 : शिक्षा तकनीकी (Educational Technology) - 4 क्रेडिट

### शिक्षण उद्देश्य

- शैक्षिक तकनीकी के प्रत्यय, क्षेत्र एवं उपयोगिता का सामान्यीकरण कर सकेंगे।
- शैक्षिक तकनीकी के विभिन्न प्रकारों की विवेचना कर सकेंगे।
- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी की भूमिका की समालोचना कर सकेंगे।
- अनुदेशन तंत्र में संप्रेषण की प्रभावात्मकता को जान पाएंगे तथा कक्षा-कक्ष गतिविधि के दौरान अपने संप्रेषण को प्रभावी बनाएंगे।
- शिक्षा में जनसंचार के द्वारा संप्रेषणके माध्यमों के बारे में जानेंगे।
- प्रत्यक्ष एवं दूरस्थ शिक्षा तथा प्रशिक्षण के अन्य वैकल्पिक माध्यम को जानेंगे।
- शिक्षण हेतु प्रयुक्त विभिन्न अनुदेशन नीतियों के विषय में समझ विकसित कर सकेंगे।
- विभिन्न शिक्षण प्रतिमानों की व्याख्या कर सकेंगे।
- शिक्षा तकनीकी में विभिन्न नवाचारों को समझ सकेंगे।

### इकाई 1: शैक्षिक तकनीकी: प्रत्यय, प्रकृति एवं क्षेत्र

शैक्षिक तकनीकी: प्रत्यय, क्षेत्र एवं महत्व, शैक्षिक तकनीकी: प्रत्यय, शैक्षिक तकनीकी: क्षेत्र एवं महत्व, शैक्षिक तकनीकी के प्रकार: शिक्षण तकनीकी, अनुदेशन तकनीकी एवं व्यवहार तकनीकी, शिक्षण तकनीकी, अनुदेशन तकनीकी, व्यवहार तकनीकी, शैक्षिक तकनीकी के उपागम- हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, तंत्र एवं संप्रेषणमनोविज्ञान, शिक्षण के प्रकार - अनुकूलन, प्रशिक्षण, मतारोपण एवं अनुदेशन, शिक्षा में तकनीकी की भूमिका।

## इकाई 2: संप्रेषण एवं अनुदेशन

अनुदेशन तंत्र में संप्रेषणकी प्रभावात्मकता, संप्रेषण-प्रकार, प्रक्रिया एवं बाधकतत्व, संप्रेषण के प्रकार, संप्रेषण की प्रक्रिया, संप्रेषण के बाधक तत्व, शिक्षा में जन संचार के द्वारा संप्रेषणके माध्यम, कार्य विश्लेषण की अवधारणा, अनुदेशन के युक्तियाँ एवं अनुदेशन के माध्यम अनुदेशन के युक्तियाँ, अनुदेशन के माध्यम, शिक्षा एवं प्रशिक्षण: प्रत्यक्ष, दूरस्थ एवं अन्य वैकल्पिक माध्यम।

## इकाई 3: अनुदेशन प्रारूप

अनुदेशन प्रारूप: प्रत्यय, प्रक्रिया एवं अनुदेशन प्रारूप के विकास की अवस्थाएँ, अभिक्रमित अनुदेशन: उत्पत्ति एवं प्रकार- रेखीय, शाखीय एवं मैथेटिक्स अभिक्रम, अभिक्रमित अनुदेशन सामग्री का निर्माण, अनुदेशन नीतियाँ: व्याख्यान, वार्तालाप, संगोष्ठी एवं टूटोरिअल, टेली कॉन्फ्रेंसिंग, देशव्यापी कक्षा परियोजना, उपग्रह आधारित अनुदेशन।

## इकाई 4: शिक्षक व्यवहार में सुधार

सूक्ष्म शिक्षण, सूक्ष्म शिक्षण का इतिहास, सूक्ष्म शिक्षण की परिभाषाएँ, सूक्ष्म शिक्षण की मूलभूत मान्यताएँ, सूक्ष्म शिक्षण के सिद्धांत, सूक्ष्म शिक्षण के चरण, सूक्ष्म शिक्षण का भारतीय प्रतिमान, सूक्ष्म शिक्षण के लाभ, सूक्ष्म शिक्षण के उपयोग, सूक्ष्म शिक्षण की सीमाएँ, अनुकरणीय सामाजिक कौशल प्रशिक्षण, अनुकरणीय सामाजिक कौशल प्रशिक्षण का अर्थ, अनुकरणीय सामाजिक कौशल प्रशिक्षण की विशेषताएँ, अनुकरणीय सामाजिक कौशल प्रशिक्षण के तत्व, अनुकरणीय प्रविधि के सोपान, अनुकरणीय सामाजिक कौशल प्रशिक्षण से लाभ, अनुकरणीय सामाजिक कौशल प्रशिक्षण की उपयोगिता, अनुकरणीय सामाजिक कौशल प्रशिक्षण की सीमाएँ, टोली शिक्षण, टोली शिक्षण का अर्थ एवं परिभाषा, टोली शिक्षण की विशेषताएँ, टोली शिक्षण के उद्देश्य, टोली शिक्षण के लाभ, टोली शिक्षण के उपयोग, टोली शिक्षण की सीमाएँ, फ्लैण्डर्स की अंतःक्रिया विश्लेषण प्रविधि, अंतःक्रिया विश्लेषण का अर्थ एवं परिभाषाएँ, अंतःक्रिया विश्लेषण के उद्देश्य, फ्लैण्डर्स की अंतःक्रिया विश्लेषण की दस वर्ग प्रणाली, फ्लैण्डर्स की अंतः क्रिया विश्लेषण की विशेषताएँ, फ्लैण्डर्स की आधारभूत मान्यताएँ, फ्लैण्डर्स विधि की सीमाएँ, शिक्षण प्रतिमान, शिक्षण प्रतिमान की परिभाषाएँ, शिक्षण प्रतिमान के प्रकार, आधुनिक शिक्षण प्रतिमान, विकासात्मक प्रतिमान, संप्रत्यय उपलब्धि प्रतिमान, अग्रिम संगठक प्रतिमान, दिशा-विहीन शिक्षण प्रतिमान, शैक्षिक तकनीकी में शोध, शैक्षिक तकनीकी में अनुसंधानों पर आधारित नवीन प्रवृत्तियाँ।

## शिक्षा 042 : शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श (Educational Guidance and Counseling) 4 क्रेडिट

### शिक्षण उद्देश्य

- अध्येता निर्देशन एवं परामर्श की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- वे विद्यार्थियों को व्यवसाय के चयन में निर्देशन व परामर्श दे सकेंगे।
- विद्यालय में दिव्यांग तथा विविध क्षमताओं वाले विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर सकेंगे।
- व्यवसाय में कार्य का विश्लेषण कर सकेंगे।
- समायोजन की प्रक्रिया में विद्यालय और शिक्षकों की भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे।
- प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रदान किये जाने वाले व्यक्तिगत परामर्श की प्रकृति एवं महत्ता को समझ सकेंगे।

### इकाई 1: संकल्पना निर्देशन

निर्देशन का अर्थ, निर्देशन की प्रकृति- निर्देशन के कार्य, शैक्षिक, व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत निर्देशन की आवश्यकता, शैक्षिक निर्देशन, व्यावसायिक निर्देशन, व्यक्तिगत निर्देशन, राष्ट्रीय विकास के लिए निर्देश, निर्देशन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, निर्देशन के उद्देश्य, निर्देशन के सिद्धान्त, निर्देशन में परीक्षणों एवं उपकरणों की भूमिका, बुद्धि परीक्षण, उपलब्धि

परीक्षण, योग्यता परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण, संचयित रिकार्ड, वास्तविक रिकार्ड, मामला अध्ययन, साक्षात्कार, सामाजिक तकनीकी ।

### **इकाई 2: व्यावसायिक निर्देशन**

व्यावसायिक निर्देशन, व्यावसायिक चयन, व्यावसायिक विकास, विकासात्मक कार्य, निर्धारक एवं सिद्धांत, विकासात्मक कार्य, व्यावसायिक चयन एवं विकास के निर्धारक, व्यावसायिक चयन एवं कर्मचारी चयन, कार्य विश्लेषण, कार्य विवरण एवं कार्य विशिष्टीकरण, कार्य-विश्लेषण में सूचना के स्रोत, कर्मचारी विश्लेषण, प्रमुख कर्मचारी चयन विधियां, व्यावसायिक समायोजन, व्यावसायिक समायोजन के सिद्धांत, व्यावसायिक निर्देशन में मनोवैज्ञानिकों की भूमिका ।

### **इकाई 3: समायोजन**

समायोजन, समायोजनात्मक प्रक्रिया के घटक, समायोजन के विविध क्षेत्र, व्यक्तिगत समायोजन, शारीरिक विकास और स्वास्थ्य संबंधी समायोजन, मानसिक विकास और स्वास्थ्य समायोजन, संवेगात्मक समायोजन, लैंगिक समायोजन, व्यक्तिगत आवश्यकताओं से संबंधित समायोजन, सामाजिक समायोजन, घर - परिवार से समायोजन, मित्र और संबंधियों से समायोजन, पड़ोसियों तथा समुदायों के अन्य सदस्यों से समायोजन, व्यावसायिक समायोजन, एक भली भांति समायोजित व्यक्ति की विशेषताएं, कुसमायोजन, व्यक्तिगत निर्देशन, समायोजन की प्रक्रिया में विद्यालय और शिक्षकों की भूमिका ।

### **इकाई 4: परामर्श**

परामर्श- संकल्पना, अर्थ एवं परिभाषा, विभिन्न परामर्श सिद्धांत, परामर्श की विधियाँ एवं तकनीक, परामर्श के लिए साक्षात्कार की आवश्यकता, परामर्श में हाल की प्रवृत्तियाँ, परामर्श और मार्गदर्शन में शोध, परामर्श और मार्गदर्शन में अंत, विद्यालय में परामर्श सेवा, विशिष्ट बालकों के लिए परामर्श ।

## **शिक्षा 043 : ज्ञान एवं पाठ्यचर्या (Knowledge and Curriculum-I) - 4 क्रेडिट**

### **शिक्षण उद्देश्य:**

- छात्रों को पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया तथा इसमें विभिन्न पक्षों की भूमिका से अवगत कराना है ।
- पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम में संबंध का ज्ञान प्राप्त करना ।
- समय सारणी की आवश्यकता तथा महत्व का प्राप्त करना ।
- समय सारिणी के प्रकार का ज्ञान प्राप्त करना ।
- समय-सारिणी बनाने के सिद्धांत का ज्ञान प्राप्त करना ।
- पाठ्य-पुस्तक के विभिन्न गुणों का ज्ञान प्राप्त करना ।
- पाठ्य-पुस्तकों की समीक्षा ज्ञान प्राप्त करना ।

### **इकाई - 1 ज्ञान मीमांसा एवं शिक्षा का सामाजिक सन्दर्भ**

ज्ञान मीमांसा की संकल्पना, सामाजिक शिक्षा की संकल्पना, ज्ञान और कौशल, अध्यापन और प्रशिक्षण, ज्ञान, तर्क एवं विश्वास, विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षा, क्रियाकलाप, खोज एवं संवाद की संकल्पना: गांधी, डीवी और प्लेटो के सन्दर्भ में ।

### **इकाई - 2 पाठ्यक्रम शिक्षा समाज और आधुनिक मूल्य**

समाज, संस्कृति और आधुनिकता, औद्योगीकरण, लोकतंत्र एवं वैयक्तिक स्वायत्ता, अम्बेडकर के संदर्भ में आधुनिक मूल्य, वैयक्तिक अवसर, सामाजिक न्याय एवं नैतिकता और शिक्षा, राष्ट्रीयता, वैश्विकता एवं धर्म निरपेक्षता का शिक्षा से अंतःसंबंध ।

### इकाई - 3 पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य, पाठ्यक्रम की रूपरेखा, पाठ्यक्रम के निर्माण में सहभागी घटक, पाठ्यक्रम विकास के उपागम, पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया, पाठ्यक्रम मूल्यांकन की प्रक्रियाएँ पाठ्यक्रम निर्माण में शासन की भूमिका, पाठ्यक्रम निर्माण में सामाजिक घटकों की भूमिका।

### इकाई - 4 पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या, पाठ्यचर्या का अर्थ, पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम में संबंध पाठ्यक्रम के उद्देश्य, पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व, पाठ्यचर्या के प्रकार, समय सारिणी, समय सारिणी का अर्थ, समय सारिणी की आवश्यकता तथा महत्व, समय सारिणी के प्रकार, समय सारिणी के सिद्धांत, समय सारिणी बनाने में कठिनाइयाँ, मुख्याध्यापक तथा समय-सारिणी एवं पाठ्य पुस्तक, पाठ्य पुस्तकों का महत्व, पाठ्य-पुस्तकों की विशेषताएँ, पाठ्य-पुस्तकों की समीक्षा।

## शिक्षा 044 - पर्यावरण शिक्षा (Environmental Education) - 4 क्रेडिट

### शिक्षण उद्देश्य:

- पर्यावरण के अर्थ, संप्रत्यय एवं इसके विभिन्न अवयवों के विषय में वर्णन कर सकेंगे।
- पर्यावरण प्रदूषण के संप्रत्यय व प्रदूषण के प्रकार, स्रोत, प्रभाव तथा नियंत्रण की विधियों का वर्णन कर सकेंगे।
- वनोंमूलन, भूक्षरण, ग्रीन हाउस, ओजोन के कारण व प्रभाव के विषय में समझ विकसित कर सकेंगे।
- पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व की समीक्षा कर सकेंगे।
- पर्यावरण शिक्षा के विभिन्न पक्षों से परिचित होंगे।
- पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करेंगे।
- पर्यावरण शिक्षा के तरीके एवं उपागम के बारे में जानेंगे।
- पर्यावरण शिक्षा के प्रसारण में जनसंचार, चलचित्र एवं दूरदर्शन की भूमिका स्पष्ट करेंगे।
- पर्यावरण जागरूकता के विकास में अध्यापकों की भूमिका एवं उत्तरदायित्व को समझ पाएँगे।

### इकाई - 1 पर्यावरण: संप्रत्यय एवं समस्याएँ

पर्यावरण का अर्थ एवं अवयव, पर्यावरण अवनयन, प्रदूषण: अर्थ एवं प्रकार, नियंत्रण के लिए उपाय, वनोंमूलन, भूक्षरण, ग्रीन हाउस प्रभाव, ओजोन परत का अवक्षय।

### इकाई - 2 पर्यावरण शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य एवं महत्व

पर्यावरण शिक्षा का अर्थ, क्षेत्र एवं प्रकृति, पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व, पर्यावरण शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक, पर्यावरण संरक्षण एवं सतत धारणीय विकास।

### इकाई - 3 पर्यावरण शिक्षा : पाठ्यक्रम

शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता, प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के स्तर पर पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा तथा पाठ्यक्रम, पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण परिवर्तन के लिये शिक्षा।

### इकाई - 4 पर्यावरण शिक्षा : शिक्षण उपागम एवं रणनीतियाँ

पर्यावरण शिक्षा के तरीके एवं उपागम, पर्यावरण शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के तरीके एवं रणनीतियाँ, क्षेत्र भ्रमण, परिचर्चा, रोल प्ले, समस्या निवारण विधा, केस अध्ययन विधा, ब्रेन स्टोर्मिंग विधा, परियोजनाएं एवं सर्वेक्षण पर्यावरण

क्लब, पर्यावरण शिक्षा के प्रसारण में जनसंचार, चलचित्र एवं दूरदर्शन की भूमिका, समाचार-पत्रों की भूमिका, रेडियो की भूमिका, दूरदर्शन की भूमिका, फिल्म एवं वृत्तचित्र, पोस्टर, पर्यावरण जागरूकता के विकास में अध्यापकों की भूमिका एवं उत्तरदायित्व, पर्यावरण जागरूकता के विकास में अध्यापकों की भूमिका, पर्यावरण प्रदूषण दूर करने में शिक्षक द्वारा उठाये जाने योग्य अपेक्षित सोपान ।

## शिक्षा 045 - जेंडर, विद्यालय एवं समाज (Gender, School and Society) - 4 क्रेडिट

### शिक्षण उद्देश्य:

- जेंडर विमर्श के विभिन्न पक्षों से परिचित होंगे ।
- विद्यालय, समाज और जेंडर के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि का विकास कर सकेंगे ।
- भारतीय समाज में जेंडर के परिप्रेक्ष्य में समाजीकरण की प्रक्रिया के विषय में समझ विकसित कर सकेंगे ।
- स्त्रियों की शिक्षा में विद्यमान असमानता एवं प्रतिरोध के कारणों के विषय में अपनी समझ विकसित कर सकेंगे ।
- महिलाओं के लिए शिक्षा के असमान अवसरों के संदर्भ में स्त्रीवादी दृष्टिकोण से विमर्श करते हुए अपने विचार अभिव्यक्त कर पाएंगे ।
- विद्यालय पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र और विद्यालय गतिविधियों की स्त्रीवादी दृष्टि से विवेचना कर सकेंगे ।
- जेंडर संवेदनशील शिक्षाशास्त्र की आलोचनात्मक व्याख्या कर सकेंगे ।

### इकाई 1: परिचय

जेंडर, लिंग, पितृसत्ता, स्त्रीत्व और पुरुषत्व, जेंडर रूढ़ियाँ, जेंडर के मनोसामाजिक परिप्रेक्ष्य: धुर नारीवादी (रैडिकल), समाजवादी नारीवादी ।

### इकाई 2: जेंडर आधारित समाजीकरण की प्रक्रिया

जेंडर आधारित समाजीकरण की प्रक्रिया, जेंडर आधारित पहचान के विकास में परिवार, समुदाय, विद्यालय और अन्य सामाजिक संगठन कृत समाजीकरण की भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन, भारतीय सन्दर्भ में हुए नृजातीय अध्ययन ।

### इकाई 3: लड़कियों की शिक्षा

असमानता और प्रतिरोध, भारत में महिला शिक्षा का इतिहास, भारत में लड़कियों की शिक्षा की वर्तमान स्थिति व चुनौतियाँ, स्त्रीवादी दृष्टिकोण से शिक्षा के अवसरों की असमानता की व्याख्या, मीडिया और अन्य लोकप्रिय माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण ।

### इकाई 4: विद्यालयों में जेंडर असमानता

स्कूली अनुभवों जैसे पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र और विद्यालयी गतिविधियों की स्त्रीवादी दृष्टि से व्याख्या विद्यालय पाठ्यचर्या की स्त्रीवादी दृष्टि से व्याख्या, विद्यालय शिक्षणशास्त्र की स्त्रीवादी दृष्टि से व्याख्या, विद्यालय गतिविधियों की स्त्रीवादी दृष्टि से व्याख्या, जेंडर के सन्दर्भ में प्रचलन पाठ्यक्रम, कक्षागत प्रक्रियाओं द्वारा जेंडररूढ़ियों का पुनर्बलन, जेंडर संवेदनशील शिक्षाशास्त्र, जेंडर की दृष्टि से विद्यालयी अनुभवों पर मनन और युक्तियाँ, शिक्षकों की संवेदनशीलता ।

## शिक्षा: 046 - मानवाधिकार एवं शांति शिक्षा ( Human Rights and Peace Education) - 4 क्रेडिट

### शिक्षण उद्देश्य:

- विद्यालय में शांति शिक्षा के प्रसार में शिक्षक की भूमिका को जान सकेंगे।
- मानवाधिकार के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे प्रयास के बारे में जान सकेंगे।
- नागरिक अधिकार कानून, सामाजिक सांस्कृतिक अधिकार कानून से परिचित हो सकेंगे।
- मानवाधिकार के नीतिगत परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में भारतीय संविधान की भूमिका को जान सकेंगे।
- शांति शिक्षा की चुनौतियाँ सामुदायिक एवं साम्प्रदायिक संघर्ष के बारे में जान सकेंगे।
- शांति शिक्षा के संदर्भ में महात्मा गाँधी, टैगोर, जे.कृष्णमूर्ति, दलाई लामा, पाउलो फ्रेरे के विचार को जान सकेंगे।
- शांति शिक्षा के प्रसार में विद्यालय एवं शिक्षक की भूमिका को समझ सकेंगे।

### इकाई 1: मानवाधिकार की अवधारणा

मानवाधिकार का अर्थ, व्यापकता, प्रकृति, क्षेत्र, मानवाधिकार: सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक सन्दर्भ, मानवाधिकार की आवश्यकता एवं समकालीन परिदृश्य, स्त्री, दलित, समाज के वंचित वर्ग एवं मानवाधिकार, बाल अधिकार, मानवाधिकार को सुनिश्चित करने में चुनौतियाँ।

### इकाई 2: मानवाधिकार का नीतिगत परिप्रेक्ष्य

मानवाधिकार के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे प्रयास, मानवाधिकार के लिए अंतरराष्ट्रीय घोषणा पत्र, मानवाधिकार सम्बन्धी घोषणा पत्र के मुख्य तत्व एवं विशेषता, नागरिक अधिकार कानून, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अधिकार कानून, भारतीय संविधान की भूमिका, मानवाधिकार आयोग, मानवाधिकार के स्थिरत्व में अंतरराष्ट्रीय संघटन।

### इकाई 3: शांति शिक्षा के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

शांति शिक्षा का उद्भव एवं विकास, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नकारात्मक एवं सकारात्मक शांति की अवधारणा, स्त्री, दलित एवं शांति शिक्षा सांस्कृतिक समन्वय लोकतान्त्रिक मूल्य, धर्म निरपेक्षता एवं शांति शिक्षा, शांति शिक्षा की चुनौतियाँ, सामुदायिक एवं सांप्रदायिक संघर्ष जीवनशैली के रूप में शांति के लिए शिक्षा।

### इकाई 4: शांति शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य

शांति शिक्षा के सन्दर्भ में महात्मा गाँधी, टैगोर, अरबिंदो, कृष्णमूर्ति एवं दलाई लामा के विचार, शांति शिक्षा के सन्दर्भ में पाउलो फ्रेरे के विचार: क्रिटिकल कान्सशनेस के लिए शिक्षा, शांति शिक्षा में समालोचनात्मक चेतना की विधियाँ, संवाद, जाँच पड़ताल और मुक्त्यात्मक शिक्षा, शांति शिक्षा के प्रसार में विद्यालय शिक्षक की भूमिका।

